सितबर २००० Rs. 10/-

चन्दामामा

भीतरी पृष्ठों में

कॉमिक्स में ओलम्पिक

प्रायोजक: SCHOOLNET

www.schoolnetindia.com

सहप्रायोजक : nutrine

चन्दामामा

सम्पुट - 102 सितम्बर 2000 सञ्चिका-9

अन्तरङ्गम्

इस माह की विशेष

ओह... ओलम्पिक (कामिक्स)

दो राजकुमार (वेताल कथा)
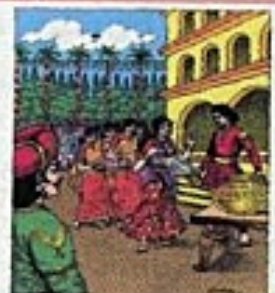
चोर का आत्मसम्मान

भारत की गाथा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai–600 026 on behalf of Chandamama India Limited, Chandamama Buildings, Vadapalani, Chennai–600 026. Editor: Viswam

सबसे उत्तम

आप अपने
दूर रहनेवाले करीबियों के लिए
सोच सकते हैं

चन्दामामा

उन्हें उनकी
पसंद की भाषा में एक
पत्रिका दें

असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़,
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल व तेलुगु

और उन्हें घर से दूर घर के
स्नेह को महसूस होने दें

शुल्क
सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक 900 रुपये

भारत में भूतल डाक द्वारा
बारह अंक 120 रुपये

अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें
सेवा में :

PUBLICATION DIVISION
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
CHANDAMAMA BUILDINGS, VADAPALANI, CHENNAI-600 026

संपादक
विश्वम

प्रधान कार्यालय :
चंदामामा प्रकाशन विभाग
चंदामामा बिल्डिंग्स
वडापलानि, चेन्नई - ६०० ०२६
फोन/फेक्स : ४८४१७७८
४८४२०८७
इ.मैल : Chandamama@ vsnl.com

मुंबई कार्यालय
2 /B, नाज बिल्डिंग्स,
लेमिंगटन रोड, मुंबई - ४०० ००४.
फोन : ०२२-३८८७४८०
फेक्स : ०२२-३८८९६७०

For USA
Single copy $2
Annual Subscription
$20
Mail remittances to
INDIA ABROAD
43, West 24th Street
New York, NY 10010
Tel : (212) 929-1727
Fax : (212) 627-9503

संस्थापक
चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

ओलिम्पिक उत्साह

विश्व में नई शताब्दी के प्रथम ओलम्पिक खेल के आयोजन के लिए बहुत तैयारियाँ की जा रही हैं ।

खेल-कूद का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि मानव समाज । महाभारत जैसे प्राचीन रचना में अनेक प्रकार के खेल बनाए गए हैं । खेलों का ऐतिहासिक तथ्य ७७६ ई.पू. का प्राप्त होता है । जब यूनान के एथेंस शहर में पहली बार ओलम्पिक खेलों का प्रदर्शन हुआ । २२१- ए.डी. में जुलियस अफ्रिकेन्स ने ७७६ ई.पू. के गौरव विजेताओं के नामों की एक सूची तैयार की । (उस समय ओलिम्पिक में महिलाएँ भाग नहीं लेती थी ।)

ओलम्पिक का नाम भगवान ज्यूज के निवास स्थान (चिन्ह) ओलम्पिया के नाम पर रखा गया जो एक पवित्र धारणा है । मानव शरीर और इसकी चेतना ईश्वर का वरदान है । उस समय अच्छा प्रदर्शन कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना ईश्वर की उपासना करने के समान था । एक सफल प्रतियोगी के पुरस्कार और सम्मान के लिए मात्र पत्तियों से बनाया गया एक ताज (मुकुट) मिलता था । उस समय लोग प्रतियोगियों के प्रति स्नेह का भाव रखते थे लेकिन कोई विवेकहीन मोह नहीं । जिस उत्साह के साथ वे खेलते थे उसका वर्णन २०वीं शताब्दी के कवि ग्रैन्टलैण्ड राईस ने बहुत अच्छे ढंग से किया है । जिन्होंने कहा "तुम जीते या हारे यह कोई अर्थ नहीं रखता, तुम खेल को कैसे खेलते हो वह अधिक महत्वपूर्ण है ।" यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि एक महान निर्णायक भगवान ही हो सकता है ।

१८९६ में जब फ्रांस के बार्रो द' कुबेर्ते द्वारा ओलम्पिक को वर्षों तैयारी के बाद दुहराया गया तो विश्व भर में खेल कूद के प्रति उत्साह था । लोग खिलाड़ी भाव तथा उत्साह के बारे में बात करते थे । यही ओलम्पिक के दौरान खिलाड़ियों द्वारा ली जानेवाली इस शपथ को परिलक्षित करता है : "हम लोग एक सच्ची भावना और शुद्ध इच्छा के साथ प्रतियोगिता में भाग लेंगे और एक सच्चे खिलाड़ी के भांति खेल के गौरव को बनाए रखेंगे ।

समाचार झलक
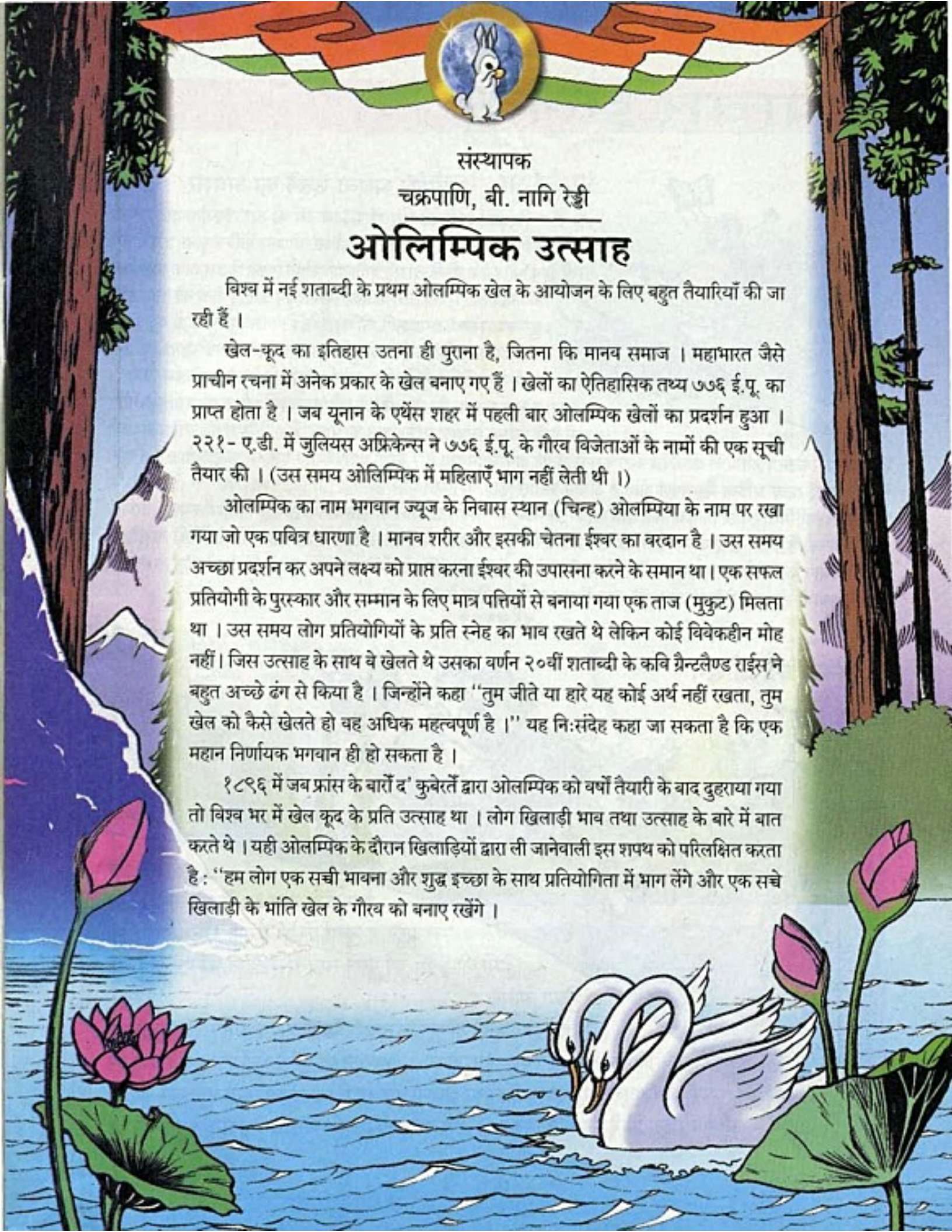
पुरस्कार अथवा उड़ने का अवसर

चेन्नई के निकट स्थित एक विद्यालय को उस समय अपार प्रसन्नता हुई जब उसके दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम घोषित हुआ । विद्यालय की दो छात्राओं बिन्द्रा एवं प्रवीणा ने अपने विषय में उच्च अंक प्राप्त किए थे । उनकी इस सफलता के लिए सरकार की ओर से दोनों को नगद रूपए पुरस्कार स्वरूप तथा आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति भी दी गई ।

इसके अतिरिक्त विद्यालय ने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए उन्हें हैदराबाद में छुट्टियाँ बिताने के लिए हवाई जहाज से भेजने का प्रबंध किया । जिसका कारण बताया गया कि यह गाँव में रहने वाले बच्चों को शहरी बच्चों की भाँति हवाई जहाज में बैठने का एक अवसर प्रदान करने का प्रयास है । जिस पर कई सारे प्रश्न उठते हैं - पहला, कितने शहरी बच्चों को हवाई जहाज में बैठने का अवसर मिलता है ? दूसरा क्या किसी स्थान पर पर्यटक के रूप में जाने के लिए हवाई यात्रा अधिक महत्वपूर्ण होती है अथवा वहाँ से कुछ जानकारी प्राप्त करना?

बहुत सारे विद्यालय अपने उच्च अंक प्राप्त छात्र-छात्राओं की तस्वीरें छपवाने के लिए दैनिक समाचार पत्रों में स्थान आरक्षित करवाने में जुटे हैं । यह कोई चकित होने की बात नहीं है कि टुटोरियल संस्थाएँ उन उच्च अंक प्राप्त छात्र-छात्राओं की तस्वीरें भी अपने संस्थान के नाम के साथ छपवा रहीं है जो कभी उनके पास गए ही नहीं । अब सवाल यह उठता है कि इसमें कौन लाभान्वित हुआ? विद्यार्थी अथवा टुटोरियल संस्थाएँ? प्रश्न विचार करने के योग्य है ।

******

सम्बन्धों को जोड़ने वाला पुल

स्वीडेन और डेनमार्क के बीच १६ कि.मी. लम्बे पुल का उद्घाटन १ जुलाई को किया गया । जिससे इन दोनों देशों की ४०० वर्ष पुराने सम्बन्ध-विच्छेद को पुनः स्थापित किया जा सके ।

वस्तुतः ७००० वर्ष पूर्व यह एक समतल मैदानी क्षेत्र था । परन्तु (हिम युग) वर्फ के पिघलने से ये दोनों राष्ट्र अलग हो गए । एक हजार वर्ष पूर्व ये दोनों एक दूसरे के शत्रु बन गए । इस शत्रुता का कारण स्वीडेन का दक्षिणी भाग स्काने था । जिस समय बहुत सारे युद्ध हुए उसी समय डेनमार्क ने इस पर लगभग ६०० वर्षों तक राज्य किया । परन्तु अन्त में स्काने पुनः १६५८

श्रापित आयरलैण्ड

चौदह वर्षीय ऐशाह नवाबी बैंकॉक के एक टैक्सी चालक की बेटी थी । जो मलेशिया के एक आयरलैण्ड लंकाबी के लिए इस उद्देश्य से रवाना हुई कि २०० वर्ष पूर्व एक थाईलैण्ड की महिला द्वारा श्रापित यह स्थान अब श्राप से मुक्ति पा चुका होगा । यह थाईलैण्ड महिला ऐशाह की ही पुर्वज थी । जिसका नाम महसुरी था । ऐसा माना जाता है कि महसूरी जिसका जन्म फुकेट (थाईलैण्ड) में हुआ । वह एक सुचारु जीवन की खोज में मलेशिया चली गई । वहाँ जाकर उसने लंकाबी के एक सैनिक से विवाह कर लिया ।

जब वह सिपाही युद्ध के लिए चला गया तो, गाँव के मुखिया की पत्नी ने ईर्ष्या वश उस पर पतिता का आरोप लगाया । उसकी बात को सही मानते हुए गाँव वालों ने महसूरी को मृत्युदण्ड दे दिया और उसे एक धारदार चाकू से मार दिया गया । परन्तु आश्चर्य की बात तो यह थी कि चाकू भोंकने के बाद महसूरी के शरीर से बहने वाला रक्त श्वेत था । जिससे यह प्रमाणित हुआ कि महसूरी एक पतिव्रता स्त्री थी । मरते - मरते महसूरी ने गाँव वालों को यह श्राप दिया कि इस आयरलैण्ड पर सात पीढ़ियों तक कोई लड़की जन्म नहीं लेगी । शीघ्र ही महसूरी के परिवारवाले तथा उसका एक मात्र बेटा थाईलैण्ड चले गए । वहाँ पहुँचने पर मलेशिया वालों ने ऐशाह का स्वागत किया और उसे नागरिकता प्रदान कर उसके रोजगार एवं रहने का प्रबंध भी किलया । इस प्रकार अंधविश्वास लोगों पर छाया रहा और जब ऐशाह लंकाबी गई तो महसूरी के स्मृति - चिन्ह को देखने के लिए हजारों लोग उसके साथ थे ।

******

में स्वीडेन का हिस्सा बन गया ।

लेकिन अभी भी लोग डेनमार्क के प्रति मोह को नहीं छोड़ पाए हैं । एक शताब्दी से अधिक वे इस पुल के बनने की प्रतीक्षा करते रहे । जिससे वे डेनमार्क जा सके । दो देशों को सरकारें उस समय तक एक दूसरे से नाराज रहीं, जब तक एक अनुबंध (समझौता पक्ष) उन तक नहीं पहुँच गया ।

पुल का निर्माण कार्य चार वर्ष पूर्व ही आरम्भ हुआ । जो दक्षिणी स्वीडेन के शहर मालमोएफ और डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन को जोडता है । जहाँ महान कथावाचक हैन्स क्रिस्टियन अन्डेरसन रहते थे । पुल के उद्घाटन समारोह को देखने के लिए उसके दोनों छोरों पर लगभग हजारों मान्य लोग खड़े थे ।

चन्दमामा का नवम्बर २००० का अंक बालविशेषांक होगा ।

यह प्रतियोगिता १६ वर्ष तक के बच्चों के लिए आयोजित की गई है ।

लेखन: वे १०० - १००० शब्दों की अपनी मौलिक कहानी एक उचित शीर्षक के साथ भेज सकते हैं । एक प्रतियोगी निम्न लिखित किसी भी एक भाषा कें तीन कहानियाँ भेज सकता है । (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, बेंगाली, ओरिया, तेलुगु, कन्नड और तमिल)

पेंटिंग: एक प्रतियोगी तीन चित्र भेज सकता है जो भारतीय इतिहास और पुराण की प्रसिद्ध कथायों पर आधारित हो। (जिसे लिखकर विस्तार से समझाता होगा) ये प्रविष्टियाँ हमारे चेन्नई कार्यालय के पते पर भेजी जानी जाहिए । प्रतियोगिता के लिए चयनित प्रविष्टियों का भुगतान नवरात्री के समय कर दिया जायेगा।

अंतिम तिथि : १८ सितम्बर २०००

पुरस्कार : सराहनीय कार्य और योग्यता के लिए आकर्षित पुरस्कार दिए जायेंगे ।

प्रमाणपत्र : प्रत्येक प्रतियोगि को प्रमाण-पत्र हेतु अपने अविभावकों से एक कूपन लेना आवश्यक है ।

नाम :______________________ आयु / जन्म तिथि______________

कक्षा :______________ विद्यालय ______________________

पता : ______________________________

____

____

पिनकोड:______________________

प्रविष्टियों का ब्यौरा :

१. ______________________

२. ______________________

३. ______________________
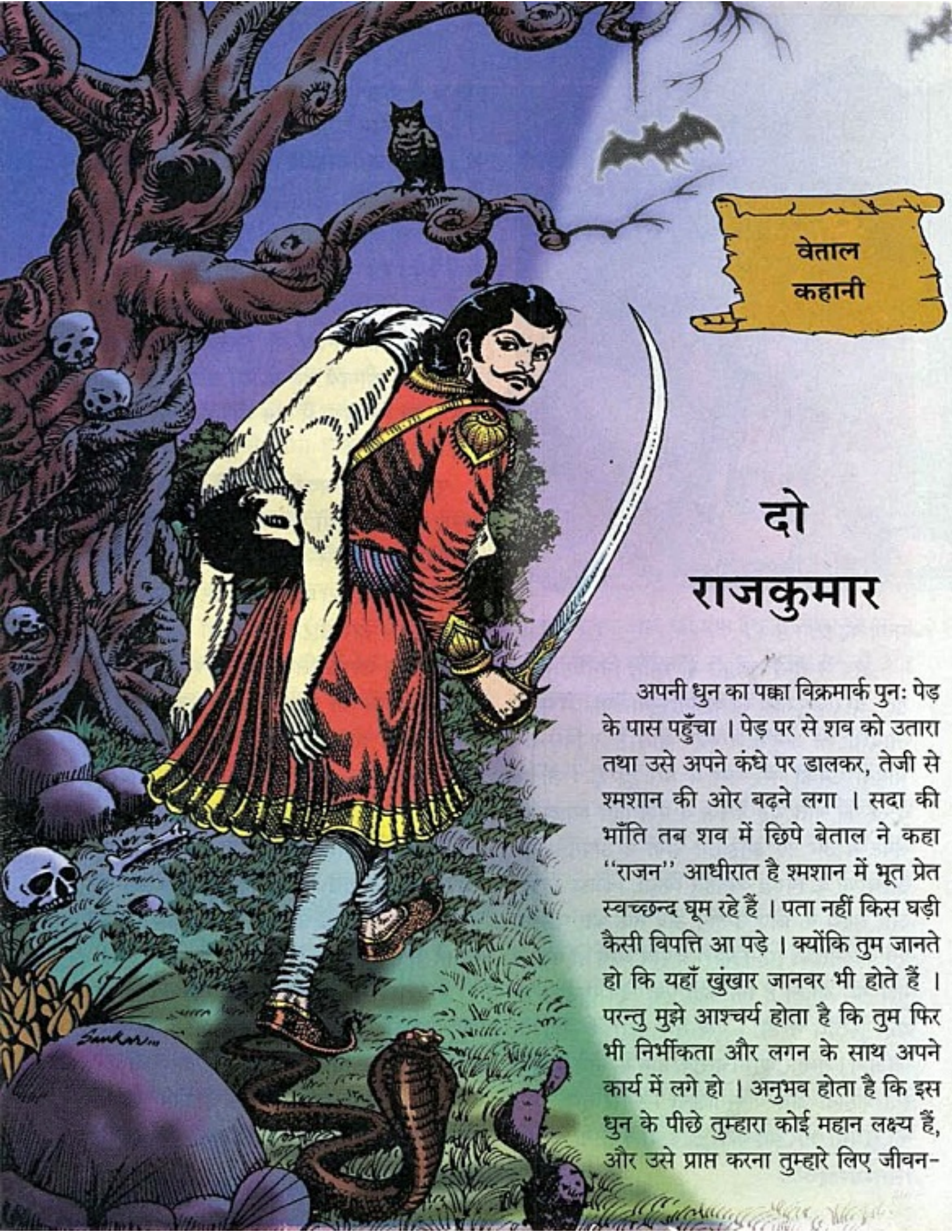
मै प्रमाणित करता / करती हूँ कि यह रचना मेरे पुत्र / पुत्री की मौलिक रचना है।

प्रतियोगी का हस्ताक्षर

अविभावक के हस्ताक्षर

वेताल
कहानी

दो राजकुमार

अपनी धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास पहुँचा । पेड़ पर से शव को उतारा तथा उसे अपने कंधे पर डालकर, तेजी से श्मशान की ओर बढ़ने लगा । सदा की भाँति तब शव में छिपे बेताल ने कहा ''राजन'' आधीरात है श्मशान में भूत प्रेत स्वच्छन्द घूम रहे हैं । पता नहीं किस घड़ी कैसी विपत्ति आ पड़े । क्योंकि तुम जानते हो कि यहाँ खुंखार जानवर भी होते हैं । परन्तु मुझे आश्चर्य होता है कि तुम फिर भी निर्भीकता और लगन के साथ अपने कार्य में लगे हो । अनुभव होता है कि इस धुन के पीछे तुम्हारा कोई महान लक्ष्य हैं, और उसे प्राप्त करना तुम्हारे लिए जीवन-

वेताल ने कहानी सुनाना आरम्भ किया -

"श्रीचन्दन व प्रणय नाम राज्य पड़ोसी राज्य थे। दोनों राज्यों के राजा प्रचंडगिरि राजा के सामंत थे। श्रीचन्दन के महाराज चन्दनदत्त की एक मात्र पुत्री जयंती थी जो अद्‌भुत सुन्दरी थी। महाराज ने उसे पुत्र की भाँति पाला-पोषा और क्षत्रियोचित सभी विद्यायें सिखायीं। अब वह सयानी हो गई थी और उसका सौन्दर्य और निखर गया था। लोग उसके रूप-सौन्दर्य की प्रशंसा करते नहीं थकते और कहते कि विश्व में अब कोई और ऐसी सुन्दरी नहीं हो सकती।

एक दिन वह अपनी सहेलियों के साथ वन में विहार करने हेतु गयी। तब उसे एक भील-प्रमुख (आदिवासी कबीले का सरदार) ने राजकुमारी जयंती को एक छोटा श्वेत अश्व भेंट स्वरूप दिया। राजकुमारी ने उस छोटे से अश्व को एक अस्तबल में रखा और उसके लिए आवश्य सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराने का आदेश दिया। वह स्वयं ही उसे प्रतिदिन चारा खिलाती और पानी पिलाती। जिससे वह दो ही वर्षों में काफी हृष्ट-पुष्ट दिखने लगा।

अश्व प्रशिक्षक ने एक दिन राजकुमारी को उस पर बिठाकर सवारी कराने की पूरी व्यवस्था कर ली। १५ दिनों में ही राजकुमारी घोड़े को तेजी से चलाने लगी।

फिर तो उस घोड़े का भी क्या पूछना! वह भी वायु-वेग से दौड़ता। उस श्वेत अश्व की भाँति स्तबल का कोई भी अश्व दौड़ नहीं पाता था।

उन्हीं दिनों ग्रामवासियों ने प्रचंडगिरि महाराज के पास जाकर शिकायत की कि जंगली हाथी उनकी

मरण का प्रश्न है।"

अब मैं तुम्हें तुम्हारी ही भाँति निर्भीक परन्तु हठी, दो राजकुमारों की कहानी सुनाऊँगा। वे महान आदर्शों का अनुकरण करने वाले हैं। निःस्वार्थ भावना उनकी नस-नस में भरी हुई है। लेकिन दुःख की बात यह है कि वे एक दिन स्वार्थ की लपेट में आ गए और उन दोनों ने अपने-अपने आचरणों के विरुद्ध व्यवहार किया। जिस आदर्श और लक्ष्य के लिए उन्होंने अब तक घोर परिश्रम एवं कठिनाईयाँ सहन कीं। वे सब व्यर्थ हो गया। मुझे भय लगता है कि कहीं एक दिन तुम्हारी भी यही स्तिथि न हो। ऐसे तुम कहीं के नहीं रह जाओगे। तुम्हारा शुभचिन्तक होने के नाते मैं तुम्हें यह कहानी अवश्य सुनाऊँगा जिससे तुम अपने को सुधारो और यह कार्य छोड़ दो। इतना कहकर

फसलों को हानि पहुँचा रहे हैं । यदि उन्हें रोका नहीं गया तो ग्राम के ग्राम और फसल नष्ट हो जाएंगे। चारों तरफ भुखमरी हो जायेगी ।

यह सुनते ही महाराज के आदेश का पालन करते हुए महाराजा का पुत्र रुद्रकेतु कुछ सिपाहियों के साथ जंगल की ओर गया । सूर्यास्त होने के पश्चात् सिपाहियों ने मशालें जला लीं । देखते ही देखते कुछ हाथी तेजी से गांव की ओर बढ़ने लगे । कुछ सिपाहियों ने ढोल बजायी और कुछ ने उन हाथियों पर बाणों की बौछार कर दी । इस आकस्मिक प्रहार से हाथी घबरा गए और पुनः जंगल की ओर भाग गए ।

प्रातः राजकुमार रुद्रकेतु और सिपाही निकट स्थित चंदनपुर सामंत चन्द्रदत के यहाँ पहुँचे । राजा चन्द्रदत ने उनका स्वागत किया और उनके रहने का पूर्ण प्रबंध किया । इसी दौरान रुद्रकेतु ने राजकुमारी जयंती को उपवन में देखा और उसकी रूप-छवि पर मुग्ध हो गया । उसने मन ही मन इस अपूर्व सुन्दरी को अपनी पत्नी स्वरूप स्वीकार करने की इच्छा की ।

इसके पश्चात, जब उसने श्वेत अश्व देखा तो राजा से कहा, 'वाह! अश्व हो तो ऐसा! यह अश्व मुझे चाहिए ।'' उसी समय जयंती वहाँ से गुजर रही थी और यह बात सुन ली । उसने राजकुमार से कहा कि ''यह घोड़ा आपको हमारी ओर से एक छोटा सा उपहार है आप इसे ले जा सकते हैं ।''

इस घटना के कुछ दिनों पश्चात ही नवरात्रि उत्सव मनाया जाना था । जिसका निमंत्रण लेकर प्रणयपुरी युवराज वैभव बर्मा स्वयं श्रीचन्दन आया और राजा चन्द्रदत्त को आमंत्रित किया । युवराज

के वहाँ स्वयं आने का एक दूसरा उद्देश्य भी था । यह लगभग सभी लोग जानते थे कि जयंती और वैभववर्मा एक-दूसरे से प्रेम करते हैं ।

उस दिन सायंकाल जब जयंती वैभववर्मा को मिली तो बातों बातों में उसने श्वेत घोड़े वाली बात राजकुमार को बतायी । उसके बातों में दुःख भरा हुआ था । उसने श्वेत अश्व रुद्रकेतु को दे तो दिया था परन्तु उसे अच्छा नहीं लगा । उसने रुद्रकेतु के दंभ की कटु आलोचना भी की ।

''हम कर भी क्या सकते है? वह ठहरा सम्राट का पुत्र और हम मात्र सामंत । भलाई इसी में हैं कि तुम इस बात को भुला दो ।'' युवराज ने जयंती को समझाते हुए कहा ।

दूसरे ही दिन वैभववर्मा अपने राज्य को वापस लौट गया । उस राज्य के प्राचीन मंदिर का मरम्मत

इतना सोचने की कोई आवश्यकता नहीं । हम अपने लिए थोड़े ही इस मणि का प्रयोग करने जा रहे थे । हम तो देवी को समर्पित करना चाहते थे । तो सम्राट के पुत्र को देने में हम क्यों आनाकानी करें सम्भवतः इससे प्रजा का भी कल्याण हो !''

एक सप्ताह के भीतर ही वैभववर्मा प्रचंडगिरी गये और स्वयं रुद्रकेतु को मणि समर्पित कर दी । इसके एक ही सप्ताह के भीतर प्रणयपुरी में नवरात्रि का उत्सव आरम्भ हो गया । उत्सव के एक दिन पूर्व हो श्रीचंदनपुर से राजा रानी एवं जयंती प्रणयपुरी पहुँच गए । नवरात्रि के अंतिम दिन युवराज रुद्रकेतु प्रणयपुरी आया । वीरसेन ने उसका भव्य स्वागत किया ।

दूसरे दिन प्रातःकाल बसंतोत्सव प्रारम्भ हुआ । राज्य-मंदिर के सामने ही हल्दी, चंदन तथा कुंकुम से मिश्रित वसंत को वैभववर्मा ने सुवर्ण पात्र में भरकर जयंती के ऊपर छिड़क दिया । जयंती ने रूठने का नाटक करते हुए वह पात्र उसके हाथ से छीन लिया और भागते हुए वैभव वर्मा का पीछा करने लगी । इस दृश्य को देखकर रुद्रकेतु ईर्ष्या से जल उठा । उसे लगा कि अधिक विलम्ब करने से जयंती किसी और की हो जाएगी । वह शीघ्रता से उठकर राजा चन्द्रदत्त के पास पहुँचा और कहा, ''राजन आगामी कार्तिक द्वादशी के दिन मेरा राज्याभिषेक होनेवाला है । उसी शुभ अवसर पर मैं आपकी पुत्री जयंती को अपनी रानी बनाना चाहता हूँ । मैं आशा करता हूँ कि इससे आपको कोई आपत्ति नहीं होगी ।''

युवराज की यह बात सुनकर चन्द्रदत्त हतप्रथ रह गए और साथ ही बैठे वीरसेन भी चकित हो

कार्य चल रहा था । जब मजदूर उन दिवारों को खोद रहे थे उन्हें एक चमकता हुआ नीलमणि प्राप्त हुआ । वैभववर्मा और उसके पिता ने निश्चय किया कि नौरात्रि के समय यह मणि देवी मुकुट में जड़ा कर देवी को समर्पित कर दी जायेगी ।

गुप्तचरों के द्वारा यह बात रुद्रकेतु को ज्ञात हुई। उसने तत्काल राजा वीरसेन को आदेश दिया कि निकट भविष्य में ही मेरा राज्याभिषेक होने वाला है । मेरी यह तीव्र इच्छा है कि यह मणि मेरे मुकुट में शोभायमान हो । इसलिए आप शीघ्र ही उस मणि को मेरे पास भिजवा दें ।

राजा वीरसेन को युवराज की इस बात से क्लेश हुआ । इसे टालने का वे उपाय सोचने लगे । परन्तु कुछ समझ न सके । उन्हें इस भाँति दुःखी देख कर वैभवबर्मा ने कहा ''पिताजी इस बात को लेकर

एक-दूसरे को देखने लगे । चन्द्रदत्त बिना कोई उत्तर दिए चुप रह गए । इस चुप्पी के पीछे छिपे रहस्य को रुद्रकेतु ने जान लिया और क्रोधित होकर कहा - ''यदि आप अपनी पुत्री का विवाह मुझसे नहीं करवाना चाहते हैं तो स्पष्ट कह दीजिए । मैं जो पाना चाहता हूँ उसे पाकर ही रहता हूँ ।''

निकट दूरी पर ही खड़े वैभववर्मा और जयंती ने रुद्रकेतु का ऊँचा स्वर सुना । वे दोनों पास आकर चन्द्रदत्त से कारण पूछने लगें । परन्तु चन्द्रदत्त अपनी असहाय स्थिति प्रकट न कर पाए ।

तब रुद्रकेतु ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा ''मैं बताता हूँ कि बात क्या है? तुम ! निकट भविष्य में प्रचंडगिरी के होने वाले सम्राट की रानी बनने वाली हो । यह सुखद समाचार सुनकर तुम्हारे पिता हक्के बक्के रह गए और उनके मुँह से कोई बात ही नहीं निकल पा रही हैं ।''

जयंती ने तत्काल कहा, ''क्षमा कीजिए युवराज, मैं इस विवाह का तिरस्कार करती हूँ । मुझे यह स्वीकार नहीं है । इससे पूर्व मैं किसी और से विवाह करने का निश्चय कर चुकी हूँ ।''

क्रुद्ध रुद्रकेतु ने कहा ''अच्छा ! यह बात है ! अरे, यह वैभववर्मा तो मात्र सामंत पुत्र है । मैं कल ही पिताजी की अनुमति लेकर इन दोनों राज्यों पर युद्ध की घोषणा कर दूंगा । और तब तुम्हारा यह वैभव वर्मा फांसी से बच नहीं सकेगा । ऐसी स्थिति में तुम्हें मेरा हाथ थामजा ही पड़ेगा ।''

वैभववर्मा इस बात को सहन न कर सका और हस्तक्षेप करते हुए कहा ''इतना आवेश अच्छा नहीं होता युवराज! बड़ों ने भी हमारे विवाह की आज्ञा दी है । व्यक्तिगत कारणों से हमारे राज्यों पर

आक्रमण करना धर्म-विरुद्ध नीति है । यह अधर्म होगा ।

यह सुनते ही रुद्रकेतु और क्रोधित हो उठा और कहने लगा ''मूर्ख, अपने वश में रहकर बात कर? क्या भावी प्रचंडगिरी महाराज से बात करने का यही ढंग है?''

दूसरे ही क्षण वैभववर्मा ने तलवार की मूठ पर हाथ रखते हुए कहा ''युवराज! एक काम करते हैं, दोनों खड्ग युद्ध करेंगे, जो विजयी होगा वही जयंती से विवाह करेगा । इससे, तीनों राज्यों के बीच होने वाला युद्ध और युद्ध से होने वाली क्षति से हम बच सकेंगे । तलवार निकालिए !''

वैभव वर्मा की पौरुषभरी बातें सुनकर रुद्रकेतु अवाक् रह गया । अपने को शांत करते हुए उसने कहा : ''प्रणयपुरी के युवराज! हम दोनों के मध्य

खड्ग युद्ध की आवश्यकता ही क्या है? तुम जयंती से विवाह कर सुखी जीवन व्यतीत करो । उसके प्रति मेरा व्यवहार बहुत अनुचित रहा । इसके लिए मुझे खेद है ।''

बेताल ने पूरी कहानी सुनाने के पश्चात विक्रमार्क से कहा ''राजन् राजकुमारी जयंती अपने श्वेत अश्व को बहुत चाहती थी, फिर भी उसने उसे रुद्रकेतु को उपहार स्वरूप दे दिया । किन्तु मन ही मन उसे इसके लिए दुःख हुआ । वैभववर्मा ने भी उसे सलाह दी कि वह उस बात को भूल जाए और अपने मन को शांत रखे । इस भाँति उसने नीलमणि भी रुद्रकेतु के चाहने पर उसे दे दी । ऐसी स्थिति में हमें लगता है कि वह रुद्रकेतु से डरता था। ऐसा व्यक्ति जयंती के मामले में खड्ग युद्ध करने को तैयार कैसे हो गया? ऐसे समय पर दंभी रुद्रकेतु ने म्यान से तलवार क्यों नहीं निकाली? बल्कि एक कायर की भाँति वैभववर्मा को जयंती से विवाह कर सुखी रहने की बात कहने लगा ! यह सब देखकर मुझे लगता है कि ये दोनों राजकुमार कायर और स्वर्थी थे । उनमें न ही स्थिरता है न ही निर्भीकता। बस वे नाटक करते हैं कि वे बलशाली है । यदि तुम जानते हुए भी उत्तर नहीं दोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे ।''

विक्रमार्क ने कहा ''स्वार्थ, आग्रह, स्थिति और बुद्धि आदि को उन व्यक्तियों को दृष्टि में रखकर ही आँकना होगा । दोनों जयंती के सौन्दर्य पर मुग्ध हुए और उससे विवाह करना चाहा । इसलिए उन्हें स्वार्थियों की श्रेणी में नहीं जोड़ा जा सकता है । बहादुर व हठी कितना भी क्यों न हो । जब वह जान लेता है कि उसकी पराजय निश्चित है, तो पीछे हट जाना कायरता नहीं कहलाती । अपनी प्रेयसी के बचाव के लिए वैभव वर्मा ने यह कहकर तलवार निकाली कि खड्ग युद्ध हम दोनों तक ही सीमित हो । राज्य और प्रजा को इसकी हानि न वहन करनी पड़े । क्योंकि यह व्यक्तिगत कारण है। रुद्रकेतु ने प्रजा और राज्य की भलाई को ध्यान में रखते हुए न्याय-मार्ग पर चलने की ठानी । इसलिए विवाद को वहीं समाप्त कर दिया। यह एक अच्छे और बुद्धिमान सम्राट के गुण का परिचय था । इसे रुद्रकेतु की कायरता नहीं कहा जा सकता ।''

इस प्रकार राजा का मौनभंग करने में सफल बेताल शव सहित पेड़ पर जा बैठा ।
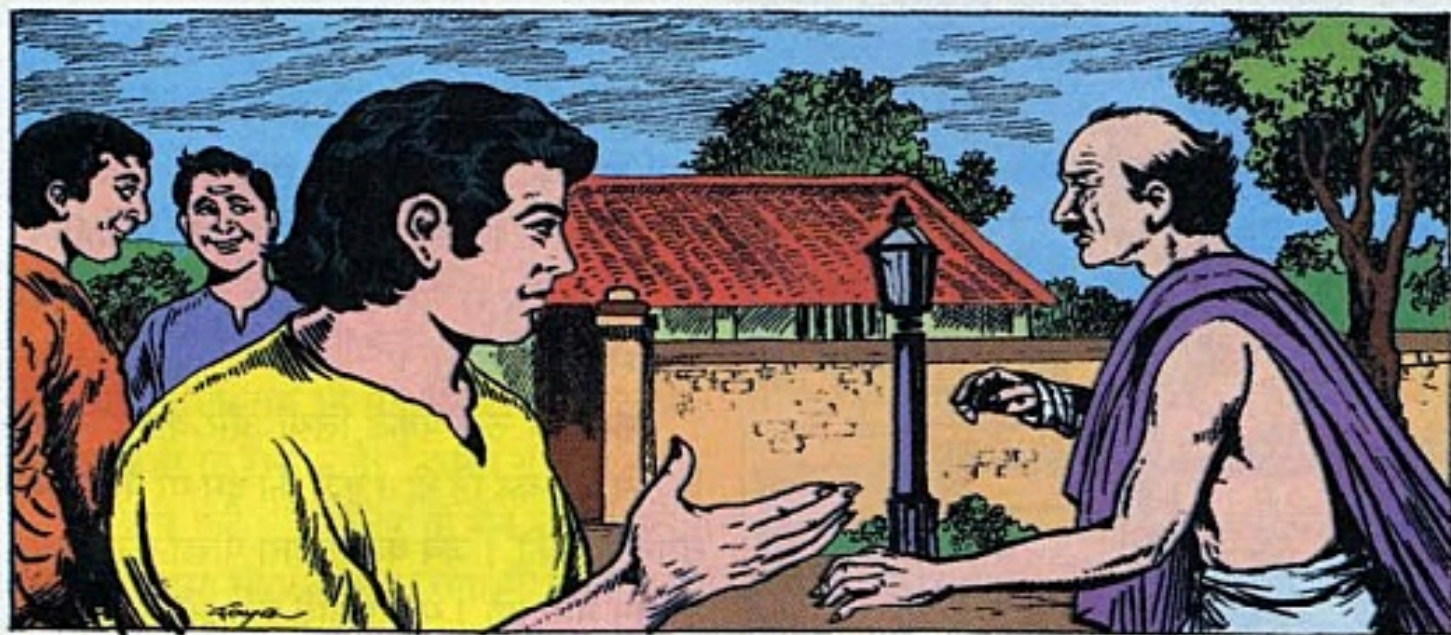
कोल्हू का बैल

रामापुर के एक धनी व्यापारी प्रताप का एक पुत्र था । जिसका नाम कमल था । बचपन से ही वह अपने मामा के यहाँ शहर में रहता था और शिक्षा प्राप्त कर रहा था । प्रताप अपने पुत्र को बहुत स्नेह करते थे । इसलिए जब कभी भी कमल को जितने भी पैसों की आवश्यकता होती वे तुरंत भेज देते। अधिक धन मिलने के कारण वह व्यर्थ के व्यसनों में पड़ गया । उसकी मित्रता भी अच्छे लोगों से नहीं थी । वह अपने मामा का भी भय नहीं मानता था । पढ़ाई में उसका बिल्कुल मन नहीं था । बस नाम-मात्र के लिए पढ़ाई पूरी करके वह रामापुर लौटा ।

शहर से पढ़ लिखकर आने के कारण वह बहुत गर्वित अनुभव करता था । उसका अहम उसके मुँह से निकली हर बात से टपकता था । व्यर्थ में ही सभी से वाद-विवाद करता था और सदा अपने को ऊँचा दिखाने का प्रयत्न करता था । दूसरों की बातों और अन्य वस्तुओं में खोट निकालता था और उसे अपमानित करता था ।

एक दिन जब वह गली में से होकर जा रहा था, तब उसने गंगू नामक एक आदमी को देखा। जिसने अपने हाथ पर पट्टी बाँधी थी । उसे देखते ही कमल ने पूछा - क्या बात है गंगू पट्टी क्यों बाँधी हुई है ?

गंगू ने सविनय कहा 'नीचे गिर पड़ा था ।'

कमल ने पूछा ''कैसे गिरे?

गंगू ने कहा - दौड़ते दौड़ते नीचे गिर गया ।

कमल ने पूछा ''क्यों दौड़ रहे थे? ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी थी?''

गंगू ने कहा ''गली के एक कुत्ते की पूँछ पर मैंने अनजाने में पाँव रख दिया ।''

कमल ने पूछा ''तुमने देखा नहीं?''

गंगू ने कहा ''सोच में पड़ा हुआ था ।''

दासरी वेंकटरमण
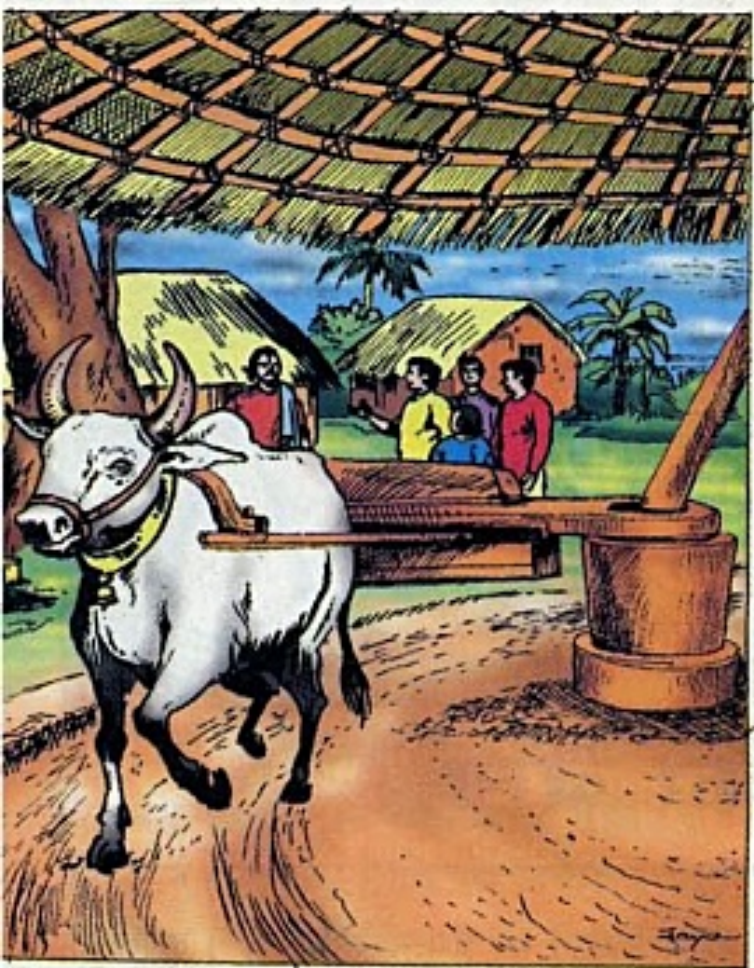
कमल ने पूछा "किस बात को लेकर सोच में पड़े थे?"

गंगू ने कहा "क्या कहूँ । कोई ख़ास बात तो नहीं थी । बस, सोच रहा था ।"

कमल ने पूछा "वही तो पूछ रहा हूँ । आखिर सोच क्या रहे थे?"

गंगू ने उदासी भरे स्वर में कहा "एक घरेलू झगड़े को लेकर"

इसके बाद दोनों में बातचीत का सिलसिला जारी रहा । कमल ने फिर पूछा "दोड़ते-दौड़ते क्यों गिर गये?"

"ठोकर लग गयी, बस गिर पड़ा" गंगू ने कहा।

"ठोकरें खाते-खाते क्यों गिरते रहते हो? क्या किसी पथ्थर से टकरा गये?" कमल ने पूछा ।

"मैंने देखा नहीं" गंगू ने कहा ।

"अच्छा । कोई बात नहीं । पर यह तो बताओ कि गिरने पर दायें हाथ को ही क्यों चोट लगी?" बायें हाथ को क्यों चोट नहीं लगी ?"

कमल के सवालों की बौछार होती ही रही ।

गंगू ने गौर से उसे देखा और तेज़ी से दौड़कर वहाँ से जाना चाहा ।

कमल ने उसे पकड़ लिया और कहा "देखो, फिर से भूल कर रहे हो । कुत्ते की दुम पर पैर रखकर तुमने भूल की । जब वह तुम्हारा पीछा करने लगा, तो तुम भाग उठे । यह तुम्हारी एक और ग़लती है । कमल ने कहा ।

"साहब, इस बार के लिए मुझे क्षमा कर दीजिये और छोड़ दीजिये । आगे से कभी भी ऐसी भूल नहीं करूँगा ।" तंग आकर उसने कहा और वहाँ से चल पड़ा । जाते-जाते उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा ।

एक और दिन जब अपने मित्रों के साथ वह गली से जा रहा था, तब उसकी दृष्टि भैरव के कोल्हू पर पड़ी । इधर-उधर देखे बिना कोल्हू का बैल चारों ओर घूम रहा था । भैरव कोल्हू से थोड़ी दूरी पर बैठकर उसके लिए सानी बनाने में लगा हुआ था। कमल को उसे तंग करने की सूझी । वह अपने मित्र के साथ उसके पास गया ।

भैरव कमल के बारे में बहुत अच्छी भाँति जानता था । फिर भी वह बड़ी ही सावधानी व चतुरता से उसके हर प्रश्न का उत्तर देता रहा । उसके जवाबों से इस बार कमल स्वयं तंग आ गया जो उसे परेशान करने यहाँ चला आया था, परंतु उल्टे खुद परेशान हो गया ।

थोड़ी देर तक वह चुप रहा और फिर उससे

पूछा "भैरव, क्यों भला कोल्हू के बैल के चारे के लिए इतना खर्च करते हो? ऐसा क्या बड़ा काम वह करता है?"

"क्यों नहीं करूँ? जब देखो कोल्हू के चारों ओर घूमता रहता है; तेल निकालता है" । भैरव ने कहा ।

"समझो, तुम किसी काम पर भीतर चले गये । क्या भरोसा कि तब भी वह चक्कर काटेगा? खड़ा का खड़ा ही रह सकता है!" कमल ने पूछा ।

भैरव ने कहा "इसीलिए तो मैंने उसके गले में घंटा बांध दिया भीतर काम पर लगा भी रहूँ तो उसके घंटे की ध्वनि से मुझे मालूम हो जाता है कि वह चक्कर काट रहा है, अपने काम पर लगा हुआ है।

"हो सकता है, चक्कर काटे बिना वह एक जगह पर खड़ा हो जाए और अपना सिर हिलाता रहे । उस स्थिति में भी घंटे की आवाज़ तो आयेगी ही। तब तुम्हें उसके नाटक का कैसे पता चलेगा?" कमल ने पूछा ।

उसके इस सवाल से भैरव भड़क उठा । अपनी नाराज़ी को वह छिपा नहीं पाया । उसने कड़ुवे स्वर में कहा "मुझे धोखा देने के लिए वह थोड़े ही शहर में पढ़कर आया ।"

भैरव के इस उत्तर पर कमल के मित्र ज़ोर से हंस पड़े । कमल का सिर लज्जा से झुक गया । उसके मुँह से बात ही न निकली ।

तब भैरव ने कहा "देखो कमल, कोई काम किये बिना जो मटरगस्ती करता रहता है, गलियों में घूमता-फिरता रहता है, उसकी तुलना कोल्हू के बैल या नादिया से की जाती है । पर मेरी दृष्टि में ऐसी तुलना सरासर अन्याय है । क्योंकि कोल्हू के बैल के घूमने से ही तेल निकलता है । नादिया गाँवों में घूमता रहता है, अपने खेल दिखाता है सबको खुश करता है और अपने मालिक का पेट भरता है । जंतु होते हुए भी दोनों कड़ी मेहनत करते हैं । ऐसे जीवों की बराबरी आलसी मनुष्यों के साथ करना उनके प्रति बड़ा अन्याय करना है।"

कमल कुछ भी कहे बिना सिर झुकाकर वहाँ से चला गया । भैरव की कड़ु बात पर वास्तविक बातों ने उसे प्रभावित किया । उस दिन से वह व्यापार में अपने पिता की सहायता करने लगा और थोड़े ही दिनों में वह स्वयं अच्छा व्यापारी भी बना।

कहानी को सही अन्त दीजिए और पुरस्कार जीतिए

सृजनात्मक प्रतिस्पर्द्धा

नीचे एक कहानी का आरम्भ दिया गया है । इसमें एक रोचक कथा के सभी उपादान मौजूद हैं । किन्तु यह 'सृजन' तुम्हारे हाथों में है ! तुम्हें सभी सम्भव कथाक्रमों की कल्पना करनी है और कहानी को अन्तिम रूप देना है । साथ ही एक आकर्षक शीर्षक भी । यह तुम्हें दो सौ से तीन सौ शब्दों के बीच करना है - न कम, न अधिक । सर्वोत्तम प्रविष्टि को आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा तथा इस पत्रिका में प्रकाशित भी किया जायेगा । यह प्रतिस्पर्द्धा हमारे बाल पाठकों के लिए है । अपना नाम, उम्र, कक्षा, विद्यालय का नाम तथा घर का पता (पिन कोड के साथ) लिखना न भूलना ।

प्रजा का दुःख सुख जानने हेतु राजकुमार प्रताप सामान्य कपड़े पहनकर राज्य में घूमने के लिए निकले ।

वह कुछ दूर बाद अपने घोड़े से उतर कर पैदल चलने लगे । थोड़ी दूरी तय करने के बाद राजकुमार के एक पांव का जूता टूट गया । जिसके कारण उन्होंने दूसरे पांव का जूता भी निकाल दिया और नंगे पांव चलने लगे । कुछ दूर वे और चलते इससे पूर्व ही उनके पांव में कांटा चुभ गया । बहुत प्रयास करने पर भी राजकुमार से कांटा नहीं निकाला गया । वह इस आशा में नीचे वहीं बैठ गये कि सम्भवतः कोई इस रास्ते से आये। बहुत समय तक पीड़ा में तड़पते रहने के बाद उधर से एक किसान की बेटी जाती हुई दिखाई दी । जो अपने पिता के लिए भोजन लेकर जा रही थी । उसने देखा कि एक युवक असह्य पीड़ा से बेचैन इधर-उधर सहायता की दृष्टि से देख रहा है । ज्यों ही उसे पता चला कि राजकुमार को काँटा चुभ गया है तो उसने एक दूसरा काँटा लेकर चुभे हुए काँटे को पाँव से निकाल दिया । फिर उसने कुछ पत्तियों को लेकर उसे अपने हाथ में मसलकर मलहम बना । उसके पश्चात उसने उस मलहम को स्थान पर लगा दिया । इसके बाद लड़की ने अपनी साड़ी से एक छोटी चौड़ाई या कपड़ा फाड़कर राजकुमार के पाँव पर बाँध दिया ।

"बहन मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ ।" राहत महसूस करते हुए राजकुमार ने कहा । "बताओ मैं कैसे तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ?"

"मेरी सहायता करने से पहले अपनी सहायता करना सीखो ।" लड़की ने कहा । "यह तो मात्र एक काँटे की बात थी । तो तुम इतना घबरा गए थे !" और वह हँसने लगी ।

राजकुमार को उसकी यह चपलता अच्छी लगी । वह कहने लगा - यह इसलिए हुआ क्योंकि इससे पूर्व मैं कभी भी पैदल नहीं चला । वह भी यह पहली बार मुझे काँटा धँसा है। मुझे पता ही नहीं था कि कांटा कैसे निकाल जाता है । यदि तुम मेरी अच्छा कोई बात नहीं .... कहो तुम्हारे लिए मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"तुम तो ऐसे कहरहे हो कि जैसे तुम महाराजा हो !" लड़की ने कहा "तुम भली-भाँति मुझे रानी बना सकते हो !"

राजकुमार ने अपना वास्तविक परिचय नहीं दिया । लड़की की सलाह को ध्यान में रखता है । उसे अपने को सहायता प्रदान करने के लिए एक अवसर मिलता है ।

लड़की को राजकुमार की वास्तविकता का पता चल जाता है । अब प्रश्न यह है - क्या राजकुमार लड़की को अपनी रानी बनाता है ? अब आपको यह देखना है कि आप कैसे इस कहानी को पूरा करते हैं? ध्यान रहे कि आपको शीर्षक भी देना है। अपनी प्रविष्टि के ऊपर सृजनात्मक प्रतिस्पर्धा लिखो । अंतिम दिनांक २५ सितम्बर २०००.

भारत की खोज क्विज़(अगस्त २०००) का उत्तर :

१. अ.आर्यभट्ट, आ. काश्मीर में अमरनाथ, इ. नचिकेता,

ई. चरवाका, जवाली (सत्यकाम जवाली नहीं), गौशाला ।

उ. अकबर ने एक नए धर्म दीन-ए-इलाही की स्थापना की। जिसे कुछ लोगों ने माना ।

२. रूरू और प्रमोदवरा ।

स्वर्ण सिंहासन

10

(अब तक आपने देखा कि : तीसरी सालभंजिका ने एक कहानी सुनाना आरम्भ किया । जिसमें सुभद्रा देश का राजा न्यायवर्धन न्याय के लिए प्रसिद्ध था । उसके दरबार में न्याय के लिए दो मित्र चन्द्र और बीर आए । चन्द्र धनी और बीर गरीब था । बीर ने चन्द्र पर आरोप लगाते हुए कहा कि वह अपने वचन से मुकरते हुए अपनी बेटी का विवाह अब मेरे पुत्र से नहीं करना चाहता। इसके बाद चन्द्र ने अपने भयान में कहा कि यहाँ धनी और निर्धन का प्रश्न नहीं है बल्कि बीर का परिवार कम चोर है । मेरी बेटी ऐसे परिवार में नही रह सकती । दूसरी ओर सिंहद्वीप के व्यापारी मणिकर्ण ने वहाँ के व्यापारी रत्नगुप्त के ऊपर उसे ठगने तथा धोखा देने का आरोप लगाया ।) अब आगे......

महाराज ने कहीं भी मणिकर्ण को टोका नहीं । उन्होंने बड़े ध्यान के साथ उसका कथन सुना । अब न्यायवर्धन राजा ने रत्नगुप्त की ओर अपना सिर मोडा ।

रत्नगुप्त तुरंत उठ खड़ा हुआ और महाराज को सविनय प्रणाम करते हुए कहा ''महाराज, मैं कोई नया नहीं हूँ । गत तीस वर्षों से ईमानदारी से व्यापार करता आ रहा हूँ । यह सच्चाई आप भी जानते हैं और नगर के व्यापारी भी । आपको यह भी मालूम है कि व्यापार में मैंने कितना कमाया । ऐसा हीन काम करके अपमानित होने की मुझे क्या आवश्यकता है? उसे चालीस हज़ार रुपये देने के बाद ही मैंने इसके माल को अपने आधीन किया ।

लक्ष्मी गायत्री

इससे ज्यादा मैं क्या कहूँ और कहने के लिए भी क्या रखा है । एक विदेशी मुझे धोखेबाज कह रहा है, मुझपर तरह-तरह के लांछन लगा रहा है । इससे बढ़कर अपमान क्या हो सकता है?'' गदगद् स्वर में उसने आँसू भरी आँखों से कहा ।

न्यायवर्धन ने मुस्कुराते हुए कहा ''रत्नगुप्त, भगवान कृष्ण माखन चोर कहे गये हैं । हम साधारण मानव है । भगवान की लीलाओं के सम्मुख हमें कभी-कभी सिर झुकाना पडता है । अब यह बताओ कि तुम्हारा उत्तराधिकारी तुम्हारा प्यारा एकलौत बेटा सकुशल है न?''

''सकुशल है प्रभु'' रत्नगुप्त ने सिर झुकाकर ही धीरे से उत्तर दिया ।

महाराज ने कहा ''रत्नगुप्त । इस बात की चिंता करना छोड दो कि तुम्हें, सभासदों के सामने दोषी ठहराया गया है । एकांत में बैठो और निर्मल हृदय से भगवान का ध्यान करो। भगवान सर्वव्यापी हैं । उसकी दिव्य दृष्टि से कोई भी पाप बच नहीं सकता ।'' फिर उसने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे रत्नगुप्त को अंदर ले जाएँ । फिर महाराज ने मणिकर्ण से कहा ''मणिकर्ण, रत्नगुप्त प्रमुख व्यक्तियों में से एक हैं। तुम उसके लिए पुत्र के समान हो । व्यर्थ ही चिंतित न होना । थोड़ी देर तक बैठ जाना।''

उधर राजा की बात सुनते ही रत्नगुप्त सोच में पड गया और सैनिकों के पीछे-पीछे चल गया । इधर मणिकर्ण भी ताड़ नहीं पाया कि राजा का क्या निर्णय होगा । वह बहुत ही आतुर दिखायी दे रहा था । वह जहाँ खड़ा था, वहीं बैठ गया ।

राजा ने तीसरे फरियादी को बुलवाया । यह तीसरी फरियाद एक बूढ़ी माँ और उसके इकलौते बेटे के बीच के झगडे को लेकर थी। राजधानी से दूर के एक गाँव में ये रहते थे ।

अभियोगी पुत्र ने पहले अपना बयान दिया ''महाप्रभु, मैं मानता हूँ कि मेरी पत्नी काम-काज अच्छी तरह से नहीं जानती । वह एकदम नादान है । अगर उससे कहा जाएँ कि कौन-सा काम कैसे करना है, तो वह अच्छी तरह से अपना कर्तव्य निभाती है । न ही चिढती है ना ही नाराज़ होती है । वह छल-

कपट जानती ही नहीं । पर यह बुढ़िया जब देखो, उसे गाली देती ही रहती है । उसके पीछे पड़ जाती है । क्या-क्या गाली उसे नहीं देती ? प्यार से उससे बात करती ही नहीं । प्यार से उसका नाम लेकर बुलाना जानती ही नहीं । दो-तीन दिनों में एक बार उस पर हाथ भी चलाती है । बेचारी मेरी पत्नी रोती ही रहती है । अपना मुँह सीकर बैठ जाती है । मैं कहता रहता हूँ कि एक मासून को मारने से नरक जाओगी; मारने का यह बुरा काम छोड़ दो । यह मेरी बात अनसुनी कर देती है । अब मरे सामने कोई और दूसरा चारा नहीं था। अपनी पत्नी को लेकरकहीं चला जाना चाहता था । किन्तु इसने प्रतिज्ञा की कि अगर हमने चौखट के बाहर क़दम रखा तो आत्महत्या करके मर जाएगी । वह कुएँ के पास दौडी-दौडी गयी थी । ग्रामाधिकारी से मैंने अपनी दुख-भरी गाथा सुनायी । यह उसकी बात भी सुनने के लिए तैयार नहीं थी । फिर से कुएँ में कूदने गयी, पर उसीने इस बुढ़िया को मीठी-मीठी बातों से समझाया और चुपके से हमें यहाँ एक बैलगाडी में बिठाकर भेजा ।

बेटे के बयान के समाप्त होते ही बुढ़िया ऊँचे स्वर में कहने लगी ''शाबाश, सास अगर बहू को पीटे तो इसमें क्या ग़लती है? वह तो उसका अधिकार है । इस छोटी-सी बात के लिए यहाँ तक आने की क्या ज़रूरत है । मैंने आज तक न ही ऐसी बात सुनी और न ही देखा । कुछ भी हो ये दोनों चुपचाप मेरे साथ ही, मेरे ही घर रहें अगर मुझे छोड़कर चले जाएँ तो कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर

लूँगी ।''

राजा ने दो सैनिकों को तुरंत बुलाया और उनसे कहा ''तुम लोग इस बुढ़िया को रस्सियों से बांध दो । नगर के बाहर श्मशान के पास जो कुआँ है, उसमें फेंक दो । इसके मुँह में कपड़े ठूँस दो, ताकि वह चिल्ला न सके, अनाप शनाब बोल न सके'' राजा ने आज्ञा दी ।

राजा की आज्ञा सुनकर माँ और बेटा दोनों निश्चेष्ट हो गये । पर बुढ़िया ने अपने को क्षण भर में संभाल लिया और उसको बाँधने के लिए आये सैनिकों से बचने के लिए इधर-उधर बेतहाशा भागने लगी और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी ''बाप रे, यह भी कोई मौत हुई ! हे भगवान, ये राजा भी कैसे राजा है, जो मुझे कुएँ में फेंकवाना चाहते हैं । यह तो मौत के मुँह में डालना है ।''

सैनिकों ने आखिर उस बुढ़िया को आसानी से पकड़ लिया । उसके हाथों को पीछे मोड़कर रस्सी से बांध दिया । तब राजा ने बुढ़िया को अपने पास आने को कहा । जब वह पास लायी गयी, तब राजा ने उससे कहा ''हठी बुढ़िया, तुम तो धमकी देती रही कि कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर लूँगी । अगर मैंने तुम्हें कुएँ में फेंकने को कहा तो इसमें क्या ग़लती है? तुमने मुझे मायावी राजा कहा, इस अपराध के लिए तुम्हें कुएँ में नहीं फेंकवाऊँगा बल्कि मगर-मच्छोंवाले तालाब में डलवा दूँगा ।'' फिर उसने सैनिकों को आज्ञा दी कि बुढिया को ले जाकर मगर-मच्छवाले तालाब में फेक दो ।

बुढ़िया रोने-धोने लगी और कहने लगी ''महाराज, क्षमा करना । मुझसे बड़ी भूल हो गयी। मुझे न मरवाओ । मैं कभी भी कुएँ में गिरकर आत्महत्या करने की धमकी नहीं दूँगी, अपनी बहू को मारूँगी भी नहीं । मेरा विश्वास कीजिये महाराज ।''

राजा ने गंभीर स्वर में कहा ''तुम जैसे लोगों का एतबार नहीं किया जा सकता । इतनी आसानी से मैं तुम्हें छोड़नेवाला नहीं हूँ।'' फिर उसने सैनिकों से उसे जेल में बंद करने को कहा । अधिकारियों को आज्ञा दी कि इस बुढ़िया को एक ही वक्त खाना खिलाया जाए और हर दिन चाबुक से चार बार इसे पीटा जाए । फिर कभी कुएँ की बात मुँह से

निकालती है, तो मगर-मच्छों के तालाब में फेंक देना ।''

हाथों और पैरों के बंधे रहने के कारण छटपटाती बुढ़िया को जबरदस्ती सैनिक वहाँ से ले गये । अपनी माँ की इस हालत को देखकर बेटे की आँखों में आंसू भर आये ।

उसने कहा ''महाराज, मेरी माँ को क्या सचमुच मगर-मच्छों के तालाब में डलवा देंगे?''

राजा ने मुस्कुराकर कहा ''नहीं । मरने की धमकी देनेवाले को सावधान करने का यह एक तरीक़ा है । सैनिक भी यह राज़ जानते हैं । दो दिनों तक कारावास में अकेली रहेगी तो तुम्हारी माँ की बुद्धि ठिकाने पर आयेगी । इन दोनों तक तुम सराय में रहो और बाद में माँ को अपने साथ ले जाना । अगर बुढ़िया भविष्य में अनाप-शनाप कुछ बोल भी जाए तो अपनी पत्नी से कह रखना कि वह उनकी परवाह न करे । अब जा सकते हो।''

बुढ़िया का बेटा प्रसन्न होता हुआ, महाराज को बारंबार प्रणाम करता हुआ वहाँ से चला गया ।

इसके बाद महाराज ने वीर को वहाँ बुलवाया और उससे कोमल स्वर में पूछा ''अब तक तुम्हारा जोश ठंडा पड़ गया होगा । अब अच्छी तरह सोचकर बताना । तुमने क्या चंद्र के परिवार की मितव्ययता की प्रशंसा करते हुए, अपने परिवार की सुस्ती पर अपने आपको कोसते हुए, मन ही मन एक बार ही सही,

सोचा कि नहीं? अपने आप वर घृणा हो गयी कि नहीं ?''

वीर जान गया कि महाराज के कोमल स्वर के पीछे, कितनी धार है, कितना पैनापन है। वह ड़र रहा था, पर उत्तर दिये बिना रह नहीं सका उसने कहा ''महाराज, एक बार नहीं, सौ-सौ बार अपने आपको कोसता रहा । अपनी पत्नी और बच्चों को भी खूब डाँटा । फिर भी ''वह आगे कुछ कहने के लिए घबरा रहा था ।

''फिर भी इसका यह मतलब हुआ कि तुमने अपनी ग़लती मान ली । तुमने उनके दोषारोपण को स्वीकार किया और उनसे सुलह करने की ठान ली । है न?'' क्या तुम मानते हो कि चंद्र अपनी बात से जो मुकर गया,

उसका कारण धन नहीं बल्कि तुम्हारा बेजिम्मेवार व्यवहार है'' राजा ने पूछा ।

कोई और चारा न पाकर वीर ने शिष्टतापूर्वक अपना सिर हिलाया । राजा ने उसके मुख पर यह नापसंदगी स्पष्ट देखी । अब इस बार उसने कठोर स्वर में कहा ''वीर, तुम लोग सुस्त हो । अपनी सुस्ती तुम लोग त्याग नहीं सके । मेहनत करके अपने को सुधारने का प्रयास तुम लोगों ने कभी भी किया ही नहीं । सारा दोष चंद्र पर मढ़ना चाहते थे । है कि नहीं?''

वीर की आँखों में आँसू छलक आये । उसने कहा ''महाराज, आपने बिल्कुल ठीक कहा । इन सबके मूल में मेरी सुस्त पत्नी है। मैं उसे अपने काबू में नहीं कर पा रहा हूँ ।''

महाराज ने उसे डाँटते हुए कहा ''वीर, यह न कहो कि पूरी ग़लती तुम्हारी पत्नी की ही है । तुममें थोड़ी सी बुद्धि होती तो तुम उसके बश में न होते । उसी को अपनी तरफ़ ओर पाते । जो हो गया, सो हो गया । मैं तुम्हें हफ़्ते भर की मोहलत देता हूँ । ठीक सातवें दिन तुम पत्नी और बच्चों को मेरे पास ले आना ।

यहाँ के अध्यापक, वृत्ति विद्या को सिखानेवाले निपुण उनकी योग्यता की परीक्षा करेंगे और तदनुसार उन्हें सुधारेंगे - संवारेंगे । हम तत्संबंधी जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर लेंगे । परंतु हाँ, इसके लिए अपनी फ़सल का आधा भाग ग्रामाधिकारी को सौंपना होगा । तुम सोचते होगे कि जब मेरे पास ज़मीन ही नहीं रही तो कहाँ से लाकर दूँगा । ग्रामाधिकारी से कहकर तुम्हें एक एकड़ की उपजाऊ भूमि दिलायेंगे । उस खेत में तुम और तुम्हारी पत्नी मिलकर काम करें और उसे और उपजाऊँ बनावें । फ़सल में आधा तुम्हारा और आधा सरकार का'' महाराज ने कहा ।

फिर राजा ने चंद्र की ओर मुड़कर कहा ''चंद्र अगर अपनी बेटी का विवाह तुम्हारी इच्छा पर ही निर्भर है, तो ठीक है । पर एक बात का ध्यान रखना । जो भी हो, वीर तुम्हारा परम मित्र है । अगर उसका जीवन सही मार्ग पर चल नहीं रहा हो, तो उसे सुधारना, उसकी सहायता करना मित्र होने के

नाते, एक सहज मानव होने के नाते तुम्हारा धर्म है । इस धर्म को मनसा, वाचा, कर्मणा अगर तुम निभाओगे तो वीर का जीवन सुधरेगा। भविष्य में तुम दोनों के संबंधों में उन्नति होगी । वचन से मुकर जाना मेरी दृष्टि में ग़लत काम है आख़िर भूल, भूल ही होती है। अपनी इस भूल को सुधार लेना तुम्हारे हाथ में है। मैं चाहता हूँ कि किसी मन-मुटाव के बिना व्यवहार करो ।''

महाराज के न्याय-निर्णय पर चंद्र ने हाथ जोडते हुए कहा ''अवश्य ऐसा ही करूँगा, जैसा आपने कहा । हमने बीर को हीन, तुच्छ, और अयोग्य समझा । उसे किसी काम के लायक़ नहीं समझा । यह हमारे भूल है । आगे से उसे अपना ही समझकर उसमें सुधार लायेंगे। हम बचन देते हैं ।

वीर ने भी राजा को हाथ जोड़कर प्रणाम किया । फिर दोनों वहाँ से चले गये ।

तब अकेले बैठे रत्नगुप्त को राजा ने बुलवा भेजा । तब महाराज के समीप ही बैठे भौमदेश के युवराज कुमारकेतु ने देखा कि रत्नगुप्त का चेहरा कांतिहीन है, वह बहुत ही शिथिल दीख रहा है ।

महाराज ने तब रत्नगुप्त से कहा ''लगता है कि आप अपने बेटे को लेकर बहुत परेशान हैं । इसमें इतना परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस मणिकर्ण का पिता भी तुम्हारी ही तरह अपने बेटे के भविष्य के बारे में चिंतित रहा होगा ।'' फिर मणिकर्ण की ओर मुड़कर महाराज ने कहा ''कर्ण रत्नगुप्त तुम्हारे पिता समान हैं । इन्हें अपने साथ ले जाओ और कल अकेले यहाँ आना ।'' मणिकर्ण रत्नगुप्त को साथ लेकर संदेहपूर्वक देखते हुए वहाँ से चला गया ।

महाराज का बिना कोई निर्णय लिये उन लोगों को वापस भेज देना, मणिकर्ण को अच्छा नहीं लगा । वह बहुत निराश हुआ । फिर भी उसे यह आशा थी कि महाराज सम्भवतः कल उसी के पक्ष में निर्णय लेंगे और उसके साथ न्याय करेंगे । उसने और रत्नगुप्त ने सविनय महाराज को प्रणाम किया और दोनों वहाँ से चले गए। **(क्रमशः)**

सृजनात्मक स्पर्धा

गंगापुर के राजा के उद्यान की देखभाल करनेवाला माली किसी आवश्यक काम से बाहर जा रहा था । जाते-जाते उसने पौधों को पानी से सींचने का काम उन बंदरों को सौंपा, जो उसके साथ मित्रता भरा व्यवहार करते आ रहे थे । दूसरे दिन सभी बंदर पौधों को सींचने के काम में जुट गये। किन्तु बंदरों के प्रधान को संदेह हुआ कि पौधों को जितना पानी चाहिये, उतना उन्हें दिया जा रहा है या नहीं? बंदरों ने इस समस्या का कैसे निवारण किया?

पुरस्कार प्राप्त रचना

मैत्री से लाभ

बंदरों का प्रधान इसी सोच में पड़ गया । अपना काम पूरा करने के बाद बंदर टहनियों पर चढ़ गये और खेल-कूद में मग्न हो गये । तब बंदरों के प्रधान ने सब बंदरों को अपने पास बुलाया और अपनी शंका व्यक्त की । अब बंदरों में भी यह शंका जगी कि यह जो पानी वे पौधों को दे रहे हैं, वह पर्याप्त है या नहीं । वे किसी निर्णय पर नहीं आ पा रहे थे । तब एक वृद्ध बंदर आगे आया और कहने लगा ''अपनी शंका को दूर करने का एक ही मार्ग है । उन पौधों को उखाड़कर देखें, जिन्हें हमने पानी से सींचा । परंतु हम ऐसा करेंगे तो पौधे मर जायेंगे । माली बड़े ही प्रेम से उन्हें पाल-पोस रहा है । इसलिए अच्छा इसी में है कि हम उन पौधों को न उखाडे ।''

उसकी बातों को सुनने के बाद बंदरों के प्रधान को एक उपाय सूझा । उसने कहा ''मित्रो, इस उद्यान में अच्छे पौधों के साथ-साथ कुछ ख़राब पौधे भी हैं । उन्हें उखाड़कर देख लेंगे तो हमारी शंका दूर हो जायेगी । यों अच्छे पौधों को हम बचा भी लेंगे ।''

अपने प्रधान के यों कहते ही बंदर खराब पौधों को उखाड़ कर फेंकने के काम में लग गये । चूँकि उनकी जड़ें भीगी हुई थीं, इसलिए उन्हें लगा कि फूलोंवाले अच्छे पौधों के लिए जो पानी उन्होंने दिया, वह काफ़ी है । वे तृप्त होकर फिर पड़े पर जा बैठे ।

माली दो दिनों के बाद वापस आया । लहराते हुए पौदों को देखकर उसे बड़ी खुशी हुई । सारे ख़राब पौधे उखाड दिये गये थे और सारा उद्यान साफ़-सुथरा दीख रहा था । इस दृश्य ने उसे आश्चर्य में ड़ाल दिया ।

उस दिन से माली और बंदरों की मित्रता और गाढ़ी हो गई ।

- के साहिति

ओलम्पिक पर विशेष फीचर

चन्दामामा की प्रस्तुति

कवियों का कहना है कि ओलम्पिक खेलों का आरम्भ देवताओं के बीच हुए युद्ध का परिणाम है । देवताओं के पिता ज्यूस और एक अन्य देवता क्रोनास ने धरती पर अपना आधिपत्य स्थापित करने हेतु ओलम्पस पर्वत पर एक घमासान युद्ध किया । इस युद्ध में ज्यूस की विजय हुई और उन्होंने इस विजय-उत्सव को मनाने के लिए एक खेल समारोह का आयोजन कराया ।

कुछ लोगों का मानना है कि खेल का आरम्भ देवताओं की माता रिया की पूजा- वेदी के आस पास पूजा करने से लगभग १३७० ई. में हुआ ।

ग्रीक के प्रसिद्ध नायक हरकुलिस को भी कुछ समय तक ओलम्पिक खेलों का पिता माना जाता था । एक बार राजा अगीमस ने हरकुलिस को अपनी अश्वशाला का प्रधान नियुक्त किया । परन्तु जब अश्वशाला की सारी समस्याएँ समाप्त हो गईं तो, उसने हरकुलिस को कोई पुरस्कार नहीं दिया ।

उसके भक्त दौड़ने लगे । वे उसकी वेदी पर दिया जलाना चाहते थे । परन्तु आग सूर्य की पहली किरण के साथ जलाई जाती थी ।

उस समय खेल उत्सव का शुभा-आरम्भ ज्यूज के सम्मान में एक मशाल जलाकर किया जाता था । यह मशाल सूर्य की प्रथम किरण के साथ जलाई जाती थी । यदि निर्धारित दिन को सूर्य नहीं निकलता तो उत्सव को प्रतीक्षा करनी पड़ती थी ।

६७० ई.पू. के आस-पास कहा गया कि एलिस के राजा इफीटस ने एक कानून पारित किया । जिसमें खेल के दौरान लेना था प्रयोग करना मना था । यह पूरे तरीके से तैयार रंगभूमि का प्रयोग सभी एक साथ बिना शत्रुता के कर सके ।

अरे ! दुष्ट, मैं तुझे इस मैदान के बाहर देख लूँगा ।

हे भगवान ! अब एलिस में दूसरा प्लेग मत भेजो। हमारे सारे डॉक्टर पिछली बिमारी में मारे गए और हम लोग नहीं सम्भाल सकते । मैं वचन देता हूँ कि शत्रु भी खेलों में भाग लेंगे ।

क्या यही कारण है कि मैंने इतना कठिन वचन दिया ।

इफीटस द्वारा लाबर यह कास एक तरीके का वचन है जो एक काँस्म के प्लेट पर लिखा हुआ अभी भी रख गया है । यह वचन ईश्वर की ओर से दिया गया है ।
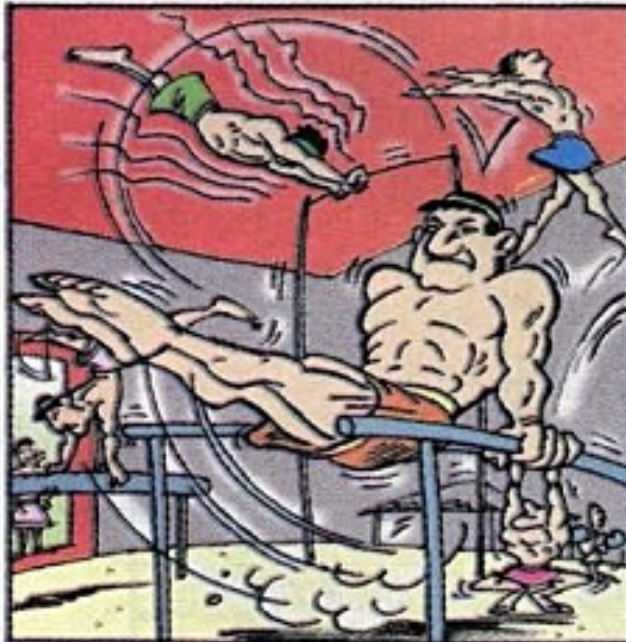
प्राचीन ओलम्पिक खेल ५ दिनों के लिए होता था । खेल के पहले दिन सभी प्रतियोगी और निर्णायक-गण हाथ में सुअर का मांस लेकर सत्य और शांति की शपथ लेते थे ।

निर्धारित दिनों में अनेक खेल प्रतियोगिताएँ आमंत्रित की गई । (सही प्रदर्शन)

प्राचीन ओलम्पिक में कुश्ती सबसे प्रसिद्ध खेल था । यह ऐसी कुश्ती नहीं थी, जिसे हम आज जानते है । इसे पैंक्रेशन कहा जाता था । जिसमें मुक्केबाजी और कुश्ती दोनों शामिल था । प्रतियोगियों में काटने, उंगलियां तोड़ने और आँखों को हानि पहुँचाना अपराध माना जाता था ।

अरेशियन एक माना हुआ पहलवान था। जिसने तीन बार ओलम्पिक खिताब जीता। परन्तु जब वह तीसरी बार पत्तियों का ताज ग्रहण कर रहा था तो अचानक उसकी मृत्यु हो गई । एक भयंकर प्रतियोगिता में अपने विरोधी द्वारा गिराए जाने पर वह अचेत हो गया । परन्तु यह भी निर्णायकों को नहीं रोक सका और उन्होंने उसके मुर्दे को ताज पहनाया ।

लेकिन उस समय अधिक महत्व रथ दौड़ को दिया जाता था । इसे जीतने के लिए प्रतियोगी कुछ भी करने को तैयार रहते । इसके लिए वे रिश्वत देने के लिए भी तैयार रहते । परन्तु पुरस्कार मात्र धनी आदमियों को दिया जाता । न कि अपना पसीना बहाने वाले चालकों को ।

एल्सी वियाड ने ४१५ ई.पू. ओलम्पिक में भाग लिया और रथ दौड़ में सात पदक प्राप्त किए । इतना ही नहीं उसने पदक के अतिरिक्त पहला दूसरा और चौथा स्थान भी प्राप्त किया ।

ओलम्पिक उस समय अधिकतर खेल का कौतुक था । यूनान वासियों को उत्सव मनाना पसंद था । एक खेल के समय ओलम्पिक में अपने प्रिय पात्रों को देखने के लिए ७० हजार से भी अधिक लोग स्टेडियम में एकत्रित थे ।

आजकल की भाँति ओलम्पिक खिलाड़ियों को किसी प्रकार का पदक नहीं दिया जाता था । वह सिर्फ पत्तों का बना एक ताज ही पाता था ।

६७ ए.डी. में यूनान के अतिरिक्त अन्य देशों के लोग भी ओलम्पिक में भाग लेने लगे । विजेता खिलाड़ी उन पत्ते से बने ताजों से खुश नहीं थे ।

हे ! ये पत्ते अब सूख गए हैं । क्या तुम कुछ नये पत्ते भी नहीं ला सकते ?

जब रोम वासियों ने यूनान जाकर ओलम्पिक में भाग लिया तो उन्होंने उसे बड़े उत्साह के साथ आरम्भ किया। उन्होंने ओलम्पिक में बहुत सारे नए अद्भुत खेलों को आरम्भ किया । जिसमें तलवार बाजी भी एक थी ।

चलो हटो ! तुम और तुम्हारी लम्बी कूद । अब देखो एक सच्चे रोमन को जो अपनी पूरी शक्ति के साथ आया है ।

आप कह सकते है कि ओलम्पिक ने ६७ ए.डी. में काफी उन्नति प्राप्त कर ली । पहली बार कुछ प्रतियोगियों के निर्णायक को रिश्वत दी गई ।

रोम के राजा नेरो ने निर्णायक को रिश्वत दिया । रोम के जलने के बाद जिसने वायलेन बजाया था, उसने एक रथ दौड़ में भाग लिया था जिसमें वह गिर गया और अपनी दौड़ पूरी भी नहीं कर सका । परन्तु फिर भी उसे विजयी घोषित किया गया ।

इसके पश्चात आधुनिक ओलम्पिक में एक और क्रांति आयी । जब पेरिस में २५ नवम्बर १८९२ में ओलम्पिक हुआ । जिसमें सभी दर्शकों ने बारों द' कुबेर्तें को ओलम्पिक का जनक माना । ''मुझे ओलम्पिक के लिए ही बुलाया गया है ।'' लेकिन वे लोग चुप रहे ।

वास्तविक ओलम्पिक खेलों की जन्मदाता भूमि ओलम्पिया में ही बारोन आधुनिक ओलम्पिक खेल १८९६ का आयोजन करना चाहता था । लेकिन वहाँ पर कोई भी आधुनिक सुविधा उपलब्ध नहीं थी और आसानी से तैयार भी नहीं की जा सकती थी ।

परिणामस्वरूप एथेन्स को ही १८९६ के आधुनिक ओलम्पिक के खेलों के आयोजन के लिए चुना गया ।

ओलम्पिक का प्रथम खेल सुचारु रूप से नहीं हो पाया । परन्तु यूनान के एक धनी व्यक्ति ने स्टेडियम की मरम्मत के लिए ९२०,००० सोने के सिक्के दिए ।

पहले ओलम्पिक के, पहले विजेता का गौरव अमेरिका के जेम्स कैनोली ने तीन लंबी छलांग में प्राप्त की ।

यूनान की सबसे प्रसिद्ध दौड़ मैराथन ही खेलों की गौरवशाली दौड़ थी। जिसे यूनान के ही एक खिलाड़ी पेन्टेन लुईस ने जीता। जैसे ही उसने खेल के मैदान में प्रवेश किया, दो यूनानी राजकुमार जार्ज एवं निकोलॉस समापन रेखा पर उसका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े। इस जीत पर एक यूनानी नाई ने आजीवन निःशुल्क उसकी दाढ़ी बनाने तथा ढाबे वाले ने खाना खिलाने का वचन दिया।
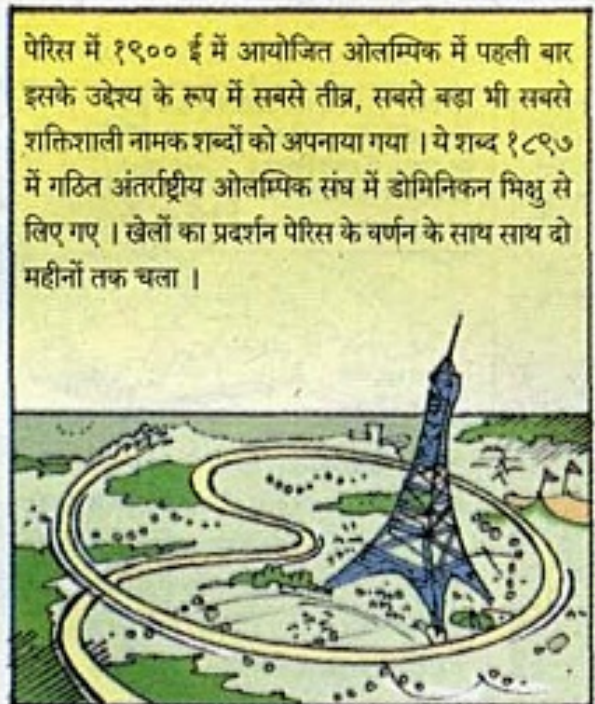
पेरिस में १९०० ई में आयोजित ओलम्पिक में पहली बार इसके उद्देश्य के रूप में सबसे तीव्र, सबसे बड़ा भी सबसे शक्तिशाली नामक शब्दों को अपनाया गया। ये शब्द १८९७ में गठित अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक संघ में डोमिनिकन भिक्षु से लिए गए। खेलों का प्रदर्शन पेरिस के वर्णन के साथ साथ दो महीनों तक चला।

पेरिस ओलम्पिक का एक और महत्वपूर्ण खेल फुटबाल था जो दो घोर शत्रुओं फ्रांस एवं जर्मनी के बीच खेला गया। यह एक भारी असफलता सिद्ध हुई कि फ्रॉस की टीम १६ के विरोध में २५ गोलों से जीत गई।

खेलों के इतिहास में प्रथम बार पेरिस ओलम्पिक में महिलाओं ने भाग लिया। जिसमें लॉ-टेनिस का पदक प्राप्त कर ब्रिटेन की कारलोटी कॉपर ने प्रथम महिला ओलम्पिक विजेता होने का गौरव प्राप्त किया।

तीसरे ओलम्पिक खेल में, जो सेंट लुईस अमेरिका में १९०४ में हुआ, उसमें बहुत बड़ा विवाद उत्पन्न हो गया। इस विवाद का कारण अमेरिकन थावन फ्रेडलॉर्ज द्वारा दौड़ के दौरान एक ट्रक में चढ़कर स्टेडिम सबसे पहले पहुँचना था। नियोजकों ने उसके इस अपराध को क्षमा कर दिया परन्तु दूसरे स्थान पर आए विजेता थोमस हिक्स को भी वह चुन न सके। क्योंकि उसने पहुँचते ही शराब पी ली।

लॅन्डन में ही पहली बार श्रेष्ठ विजेता को स्वर्णपदक दिया जाना आरम्भ किया गया ।
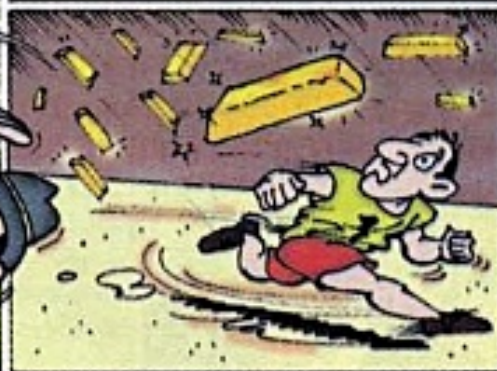
यहाँ पर यू.के. और यू.एस. के टीम के बीच हुई ५०० मी. दौड़ की प्रतियोगिता काफी रोचक रही । अंतिम दौड़ में यू.एस. का धावक किसी कारणवश जीतते जीतते असफल रहा । दूसरी बार उसको अवसर दिया गया परन्तु उसने मना कर दिया । और इस तरह स्वर्णपदक यू.के के खिलाड़ी को मिला ।

.... फिर भी कोई प्रतियोगी नहीं ।

१९१२ में पाँचवाँ ओलम्पिक स्टॉकहोम् में आयोजित किया गया । पहली बार यह तकनीकी दृष्टि से काफी विकसित प्रतीत हुआ । यहीं पर पहली बार विद्युतीय समय तरीका अपनाया गया । इसके अतिरिक्त निर्णायकों को चित्रों को स्पष्ट रूप से दिखाने वाले उपकरण दिये गए । जिससे किसी प्रकार की गलती न हो । और यह अपने काम में सफल है ।

इस प्रकार १९१५ में छठें ओलम्पिक खेलों में, जो बर्लिन में आयोजित किया गया था, वह १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध (जर्मनी) के आरम्भ होने से पूर्व न हो सका ।

गोली चलाओ, आगे बढ़ो, गोली चलाओ ।

युद्ध के समाप्त होने के तुरन्त बाद खेल आरम्भ हो गए । यह ऐन्टवेर्प में १९२० में हुआ । जिसमें ओलम्पिक के प्रतीक के रूप में ५ गोलों का चिन्ह बनाकर झंडा लहराया गया । यह झंडा डेल्फी के पूजा वेदी के पाँच गोलों से प्रभावित था। एक साथ जुड़े ये पाँच रंगों वाले गोले संसार के पाँच महाद्वीपको संकेत करते हैं ।

१९२४ में ओलम्पिक पुनः पेरिस में आयोजित किया गया । यह डीकॉरटिन का अंतिम खेल था । जिसमें वे आई.ओ.सी. के अध्यक्ष रहे । इस आठवें ओलम्पिक खेल पर पूरी तरह से पावू नर्मि जमे रहे। १९२०-२४ १९२८ तक दौड़ का पुरस्कार यही जीतते रहे । पेरिस में १५००, ५००० और १०,००० मी. की रेस में जीता । वह हमेशा अपने हाथ में एक स्टॉप वाच रखता था ।

बर्लिन के खेलों में पूर्ण रूप से एक अश्वेत अमेरिकन का नाम चमकता रहा । जिसका नाम जेस्सी ओवेन था और उसने दौड़ में पाँच स्वर्ण पदक प्राप्त किए । यह हिटलर की नकल कहच था कि जिसने आर्यों की क्षमता की वकालत की ।

दूसरे विश्व युद्ध १९३९-१९४५ ने दो ओलम्पिक देखे । एक टोकियो में १९४० में दूसरा लण्डन में १९४४ में खेला गया ।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद चौदहवाँ ओलम्पिक खेल लण्डन में १९४८ में हुआ । जिसमें नीदर लैण्ड की ३० वर्षीया फैनी ब्लैंकर केन ने दौड़ में चार स्वर्णपदक प्राप्त किए । जो कि दो बच्चों की माँ थी। ऐसा इतिहास में किसी भी महिला ने नही किया ।

पन्द्रहवें ओलम्पिक खेल में जो १९५२ में हेलसिक इमिल जाटोपैक में हुआ । उसमें चेस एसप्रेस नामक व्यक्ति ने एक प्रतिभा शाली खिलाड़ी के रूप में ख्याति पायी ।

सोलहवाँ ओलम्पिक १९५६ में आस्ट्रेलिया मेलबर्न में आयोजित हुआ । जिसने पहली बार अमेरिकन और यूरोपियन को पीछे छोड़ दिया। इसमें सोचने की बात यह थी कि घुड़सवारी प्रतियोगिता, आयोजक देश से बाहर स्वीडेन में हुई । जिसका कारण यह था कि आस्ट्रेलिया में घोड़े पर न चढ़ने के लिए बहुत ही सख्त कानून है ।

दो अश्वेत आदमियों ने रोम में १९६० में आयोजित १७वें ओलम्पिक में अपना प्रभाव अच्छा छोड़ा । उसमें से पहला चबेबे बिकिला जिसने नंगे पाँव मैराथन दौड़ लगाई और २ घंटे १५ मिनट तथा १६.२ सेकेण्ड में पूरा कर एक कीर्तिमान हासिल किया । यह बताया गया कि अफ्रिकन धावकों को तेज दौड़ने वाले जेब्रा के साथ अभ्यास कराया जाता है ।

१९६४ का ओलम्पिक जापान के टोकियो शहर में हुआ । यह पहला पूर्वी देश था जिसे ओलम्पिक आयोजित करने का अवसर मिला । खेल बहुत ही सचाई और उत्साह के साथ खेले गए । भारी वर्षा भी जापानियों के उत्साह को कम न कर सकी ।

मेक्सिको ओलम्पिक समुद्र सतह से ७५०० फीट ऊपर पर आयोजित हुआ । जहाँ छलांग लगाना काफी आसान होता है। अमेरिका के बॉब बीमन ने ८.९ मीटर लम्बी छलांग लगाकर एक विश्व रिकॉर्ड बनाया । यह रिकार्ड अभी भी बना हुआ है । इसका कारण यहाँ का २७% वातावरण दबाव और २३% वायु दाब कम था ।

अरे ! इस रिकार्ड से बेहतर रिकार्ड बनाने के लिए हमें ओलम्पिक चाँद पर आयोजित करना चाहिए ।

यहीं पर पहली बार ऊँची छलॉग में नयी तकनीक का प्रयोग किया गया । जिसे फॉसबरी फ्लोप कहा जाता था ।

मुनिच का १९७२ में आयोजित ओलम्पिक एक प्रकार का अधर्म माना गया । नकाबपोश फिलीस्तीनियों ने ५ सितम्बर को ११ इजराईली टीम के सदस्यों की हत्या कर दी ।

५,००० मीटर की दौड़ लेस्सी बीरन ने, १०,००० मीटर हॉनस कोलेमेरिनेन (१९१२) एमिल जटोपेक (१९५२), और, व्लदिमिर कुट्स(१९५६) ने भी यह दौड़ जीती । ओलम्पिक के लिए इस अभ्यास के दौरान वह रेइनडीर मिल्क पीता था ।
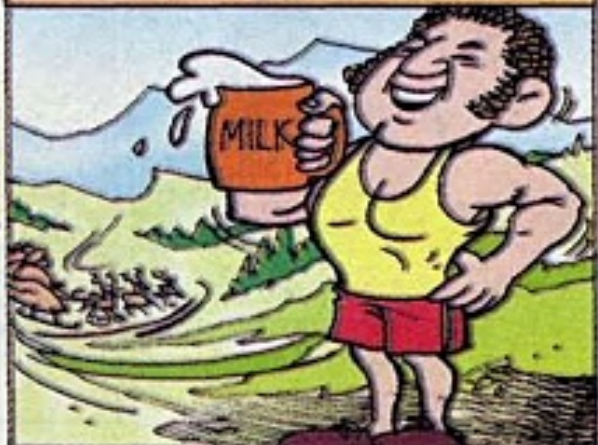
मास्को में १९८० में बहुत सारे देश जैसे पाकिस्तान, जर्मनी, यू.एस.ए. आस्ट्रेलिया, तथा हालैण्ड को आमंत्रित नहीं किया गया। जिसका कारण, ब्रिटेन के दो धावक स्टीव ओवेट तथा सेवस्टिन को जिताने के लिए बताया गया।

१९८४ के लॉस एनजेल्स के ओलम्पिक में सभी पूर्वी देशों ने पूरे तरीके से बहिष्कार किया। खेल पूरे तरीके से यू.एस.ए. के खिलाड़ी कार्ल लेविस के पक्ष में गया। जिसने जेसी ओनेस के रिकार्ड की बराबरी की। और चार स्वर्ण पदक जीते।

१९८८ में सिओल ओलिम्पिक में बेन जॉनसन ने एक मदिरा सेवन परीक्षण के बाद अपना स्वर्ण पदक खो दिया। जो कि उन्हें १०० मी. दौड़ में मिलने वाला था। इस प्रकार लगभग १०० से अधिक औषधियों के सेवन पर रोक लगा दी गई और नया औषधि परीक्षण करने वाला यंत्र बनाया गया।

मैं और नशा! बिल्कुल नहीं। मेरे नाक से हवा लेकर देख लो।

बार्सिलोना खेलों में ही सही ओलम्पि उत्साह देखने को मिला, जिसमें सभी कुछ सही तरके से हुआ। यहाँ बहुत छोटे देशों को भी अवसर दिया गया।

ऊँची कूद में उच्च स्थान पर रहे यूक्रेनिया के सेर्जी बुबका, बार्सिलोना में एक बार भी ऊपर के पोल को छू न पाया। यह सभी के लिए एक आश्चर्य की बात थी।

पिछला ओलम्पिक खेल १९९६ में अटलांटा अमेरिका में हुआ। यह शताब्दी का आखिरी खेल सर्वोत्तम रहा। यह पहला ओलम्पिक खेल था जो पूरे तरीके से व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग से आयोजित किया गया।

क्या सन् २००० के ओलम्पिक खेल मंगल ग्रह पर खेले जायेंगे ?

ओलम्पिक प्रश्नोत्तरी
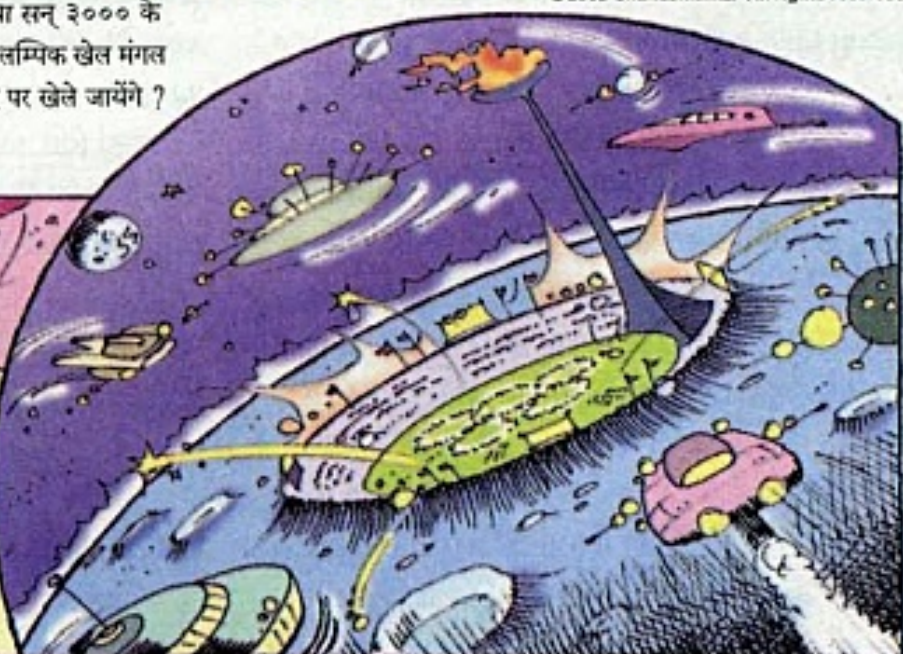
१. वह कौन पहला व्यक्ति था जिसने एक मिनट के भीतर १०० मीटर की तैराकी पूरी की?

२. १९३६ में बर्लिन ओलम्पिक में पहली बार वीडियो रिकार्डिंग कर उसे संजोकर रखने वाले व्यक्ति का नाम क्या था?

३. आस्ट्रेलिया के उस खिलाड़ी का नाम बताइये जिसने १५०० मीटर की दूरी निर्धारित समय के भीतर पूर्व कर 'ह्यूमन डीर' (मानव दिखा) की उपाधि प्राप्त की?

४. वह कौन ६५ वर्षीय व्यक्ति था जिसने निशने मध्य निशाने बाजी प्रतियोगिता में भाग लेकर अपने देश के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया?

५. भारतीय हॉकी टीम ने पहली बार ओलिम्पिक में स्वर्ण पदक प्राप्त किया और कब पराजित हो गये?

६. ओलिम्पिक ज्योति एक धावक द्वारा धावक को सौंप कर आगे बढ़ाई जाती है। इसी प्रकार ओलम्पिक के इतिहास में रिले के समय पहली बार ओलम्पिक मशाल चुरा ली गई। यह किस ओलम्पिक में हुआ?

७. अटलांटा ओलम्पि १९९६ में अन्य ओलम्पिक पुरस्कारों से भिन्न तरीके पुरस्कार दिये गए। वे पुरस्कार किस तरह से भिन्न थे?

९. वह कौन पहला व्यक्ति या जिसने ऊँची कूद में २८ फीट का रिकार्ड बनाया? उसने अपने पहली कूद में ही २९ फीट २½ ईंच ऊँची छलांगा लगाई?

१०. वह कौन एक मात्र भारतीय है, जिसने अपनी व्यक्तिगत धावक प्रतियोगिता में ओलम्पिक पदक जीता?

उत्तर :

१. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के जॉनी वेसमुलर जो बाद में टार्जन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

२. लेनी राईफेन्सल

३. आस्ट्रेलिया के हर्ब एलिऑट जिन्होंने १९६० में रोम में १५०० मीटर लम्बी दौड़ को रिकार्ड समय ३ मिनट ३५.६ सेकेन्ड में पूरा किया।

४. स्वीडिश के निशानेबाज ६५ वर्षीय आस्कर स्वैन ने व्यक्तिगत 'रनिंग डीर' प्रतियोगिता में भाग लेकर १९१२ के स्टॉकलोम ओलम्पिक में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

५. भारतीय हॉकी टीम ने १९२८ के अमस्टेर्डम ओलम्पिक में प्रथम स्वर्म पदक प्राप्त किया। और एक बड़े समय अन्तराल के पश्चात १९६० के रोम ओलम्पिक में पहली बार वे स्वर्ण पदक हार गए।

६. ओलम्पिक मशाल वार्सिलोना ओलम्पिक १९९२ में चुरा ली गई।

७. अटलाँटा ओलम्पिक में दिए गए पदकों के एक ओर खेल का चित्र जिसके लिए पदक दिया गया और दूसरी ओर ओलम्पिक का चिन्ह, पाँच गोले चित्रित थे। ऐसा पहले नहीं था।

८. मार्क स्पिट्ज ने १९७२ में मुनिच ओलम्पिक में अपने व्यक्तिगत तैराकी प्रतिस्पर्धा में सात पदक प्राप्त किए और सात ओलम्पिक रिकार्ड तोड़े।

९. मेक्सिको सिटी में १९६८ में बॉब बीमन

१०. १९०० में आयोजित पेरिस ओलम्पिक में नॉर्मन प्रिचार्ड ने २०० मी. दौड़ के लिए रजक पदक प्राप्त किया।

चित्र प्रश्नोत्तरी

ये चित्र ओलम्पिक खेलों के है ।
क्या तुम इन्हें पहचान
सकते हो ?

उत्तर : अगले पृष्ठ पर देखो

सही जोड़

विभिन्न देशों के राष्ट्रीय झँडे की पहचान करने में आप कितने सक्षम हैं? हाँ? तो क्यों नहीं पहचानने की कोशिश करते ? रुकिए ! वहाँ नीचे कुछ ओलम्पिक चिन्ह दिए गए हैं । क्या आप जानते है कि किस ओलम्पिक खेल में ये चिन्ह पाये गये ? उस देश के राष्ट्रीय झँडे के साथ मिलाईए। और सही जोड़ बनाईए।

रास्ता ढूँढो

अमित को ओलम्पिक मशाल (ज्योति) जलाने का सुअवसर मिला है । लेकिन जब वह स्टेडियम के भीतर प्रवेश करता है तो लगातार चल रहे विभिन्न खेलों के कारण अपना रास्ता ढूँढने में भ्रमित हो जाता है ।

क्या आप उसकी सहायता कर सकते हैं कि वह खेल प्रतियोगिताओं के बीच से अपना रास्ता पा सके ।

उत्तर

चित्र प्रश्नोत्तरी

१. रिले दौड़ प्रतियोगिता

२. स्प्रिंट

३. जिमनास्टिक फ्लोर एक्सरसैस

४. ऊँची कूद

सही जोड

१. वाल्डी - कुत्ता (श्वान) - १९७६ मोन्ट्रालियन, कनाडा

२. कोबी -बिल्ली - १९९२ स्पेन वार्सिलोना

३. होदोरी - चीता - १९८८ सिओल, दक्षिण कोरिया

४. ओली - कुकाबरा, माइली - एकीडना और - सैड -प्लाटिपस - सिडनी ओलम्पिक २०००आस्ट्रेलिया

चोर का आत्मसम्मान

परिश्रमी कुलवंत मदिरा और जुए का शिकार हो गया । जो भी धन वह अर्जित करता वह इन बुरी आदतों में समाप्त हो जाता । उसके बच्चे और पत्नी भूखों मरने लगे, फिर भी उसका ध्यान उनकी ओर न गया ।

एक दिन वह बिमार पड़ा और ज्वर से तड़पने लगा । उसकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो गयी । जिसके कारण वह पलंग से उठ भी न सकता था। पत्नी और बच्चों ने वैद्य को बुलाना चाहा तो वैद्य ने पैसों की माँग की । जो इनके पास बिल्कुल नहीं था । किसी से कर्ज मांगते तो पुराना कर्ज चुकाने पर लोग जोर डालते । कुलवंत घर चलाने के लिए कभी भी धन नहीं देता था । जिसके लिए उसकी पत्नी को भूष से बचने के लिए दूसरों से कर्ज लेना पड़ता था । अब वे लोग और उधार देने को तैयार नहीं थे।

उसी समय उस गाँव में दयामय नामक एक व्यापारी आया था । उसने गाँव में नारियल तथा अन्य फल वृक्षों को खरीद लिया । वह छोटे-छोटे कारखाने लगाकर लोगों को रोजगार देने लगा । सब कहते कि वह अपने नाम को सार्थक कर रहा है । गौरी को माँ जब कोई रास्ता न सूझा तो वह दयामय के पास गई । और अपनी समस्या बताई ।

दयामय ने कहा "मैं तुम्हारा कर्ज भी चुका दूँगा । तुम्हारे पति का उपचार भी करा दूँगा । पर उसके पश्चात तुम्हारे पति को मेरे यहाँ काम करना पड़ेगा । मेरे द्वारा निर्धारित नियमों के अधीन रहकर उसे काम करना होगा । यदि तुम्हें मेरी शर्त मंजूर है तो बताओ?"

गौरी के समक्ष 'हाँ' करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था । उसे दयामय की शर्तें सही लगीं और उसने तत्काल हाँ कर दिया । उसे लगा जैसे उसे और उसने बच्चों को नया जीवन

मिल जाएगा ।

दयामय को उसकी स्वीकृति पर विश्वास नहीं हुआ इसलिए उसने तुरंत दस्तावेज तैयार करवाकर उस पर गौरी का हस्ताक्षर ले लिया । तत्पश्चात अपने आदमियों को भेजकर उसने कुलवंत को अपने हस्पताल में भर्ती करवाया । चार-पाँच दिनों के अंतराल में ही कुलवंत स्वस्थ हो गया । अब वह चलने फिरने लगा था । एक दिन सभी का आभार व्यक्त करके वह अपने घर जाने के लिए तैयार हुआ ।

"कहाँ जा रहे हो? अब तुम्हें मेरे यहाँ ही काम करना होगा ।" दयामय ने गम्भीर स्वर में कहा । कुलवंत ने भय नहीं माना । परन्तु दयामय की शक्ति और अपनी पत्नी द्वारा दिए गए वचन के कारण वह जान गया कि इससे बचना बहुत कठिन है । वह चुपचाप दयामय के साथ काम काज में लग गया ।

प्रातः दैनिक चर्या से मुक्त होने के बाद उसे रात का ठंडा भोजन दिया जाता । चार-घंटों तक लगातार कार्य करने के पश्चात तब कहीं गौरी उसे घर का बना गरम-भोजन लाकर देती। थोड़े समय विश्राम करने के बाद पुनः वह चार घंटे तक परिश्रम करता । रात को गौरी फिर से भोजन लेकर आती । वही समय वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ गुजार पाता था ।

सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था । परन्तु कुलवंत को अपने कपड़ों से घृणा थी । क्योंकि वह जेल के कैदी की भाँति थे । उसे लगता कि जेल में न होते हुए भी वह एक कैदी की भाँति जीवन बिता रहा है ।

यों ही एक माह व्यतीत हो गया । काम करने के लिए जो पारिश्रमिक कुलवंत को एक महीने में मिला था, दयामय ने वह सब गौरी को दे दिया। उस दिन कुलवंत गौरी के सामने बिलख कर रोने लगा । उसने कहा कि मुझे किसी भाँति इस कैदखाने से बाहर निकालो । यह चोरों की भाँति यहाँ रहना मुझसे सहन नहीं हो रहा । तुम्हारा जीवन तो बच्चों के साथ सुखपूर्वक व्यतीत हो रहा है और मैं हर वस्तु के लिए तरस रहा हूँ । अपने पति की स्थिति पर गौरी को भी दया आयी । उसने दयामय से जाकर कहा, मालिक आपकी सहायता के लिए मैं आपकी आभारी हूँ । परन्तु आपने मेरे पति के साथ चोरों जैसा व्यवहार कर उसका अपमान कर रहे है । मुझे भी इसमें कष्ट हो रहा है । आप यदि चाहें तो, उसके स्थान पर मैं काम करूँगी और उसे आप आजाद कर दीजिये। नहीं तो कम से कम उसके लिए कुछ अच्छे वस्त्रों का प्रबंध करवा दीजिए ।

दयामय ने गौरी की बात सुनकर कहा ''दस्तावेजों में जो कुछ लिखा गया है सब कुछ उसी के अनुसार हो रहा है । भविष्य में कभी इस विषय पर बात मत करना । मैं कुछ नहीं कर सकता ।'' और उसे वापस भेज दिया । प्रतिदिन कुलवंत अपनी पत्नी के समक्ष अपना दुखड़ा रोता । एक दिन उसने कहा कि पुराणों में ऐसी न जाने कितनी कहानियाँ है कि पति ने अपनी पत्नी को बच दिया । परन्तु तुमने अपने स्वार्थ के लिए तो अपने ज्वर-पीडित पति को बिना उसकी सहमति के ही बेच डाला । ऐसा करके तुमने एक नए पुराण की सृष्टि कर डाली है । मुझे बेचने का तुम्हें क्या अधिकार है ? मैं ग्राम अधिकारी से निवेदन करना चाहता हूँ । परन्तु कोई मार्ग नहीं सूझ रहा ।

गौरी को लगा कि उसके कारण ही उसके पति के साथ अन्याय हो रहा है । उससे यह सहन नहीं हुआ । उसने ग्राम अधिकारी से मिलकर अपने पति की सहायता करने की प्रार्थना की । और सारी बातें बता दीं ।

गौरी की बातें सुनकर ग्रामाधिकारी को आश्चर्य हुआ । उसने तत्काल दयामय को बुलाया और गौरी के आरोपों पर प्रकाश डाला ।

दयामय ने निर्भीक भाव से कहा कि ''मैंने उससे पहले ही सब कुछ स्पष्ट करके दस्तावेज पर गौरी के हस्ताक्षर ले लिए हैं । मेरे कारण इस परिवार का लाभ हो रहा है । मैं कुलवंत से सबको तुलना में अधिक काम लेता हूँ परन्तु उसे पारिश्रमिक भी अधिक देता हूँ । मेरे इसी प्रकार के व्यवहार के कारण उसने शराब पीना और जुआ खेलना बंद कर दिया है । घर के खर्च के अतिरिक्त एक ठोस रकम की बचत होती है । यदि इसी प्रकार नियमित रूप से कार्य चलता रहा तो गौरी कुछ ही महीनों में खेत भी खरीद लेगी।

''आदमी के लिए पैसा ही सब कुछ नहीं है। वे आत्मसम्मान के साथ जीना पसंद करते हैं ।

स्वतंत्र रहना चाहते है । कुलवंत अपनी से जुआ खेले या शराब पीये इससे आपको क्या सरोकार? यह कोई जुर्म नहीं है !'' ग्रामाधिकारी ने दयामय से पूछा ।

''कुलवंत चोर है । आपका न्यायशास्त्र उसे दण्ड देने की स्वीकृति नहीं देता । इसीलिए मुझे इस मामले में दखल देना पड़ा ।'' दयामय ने कहा।

''साबित कीजिए कि कुलवंत चोर है । साबित हुआ तो मैं स्वयं उसे कारागार में डाल दूँगा ।'' ग्रामाधिकारी ने कहा । ''तो सुनिये ध्यान से सुनिये । हमारे समाज में हर नागरिक की अपनी अपनी जिम्मेदारी है । कर्तव्य है । माता-पिता, पत्नि-संतान की देख-रेख और भरण-पोषण करना उन्हीं कर्तव्यों में से एक है । यदि व्यक्ति अपनी इन जिम्मेदारियों को सही तरीके से निभाए तो वह अपनी इच्छानुसार अपनी कमाई के धन को व्यय कर सकता है । परन्तु कुलवंत ने अपना यह कर्तव्य नहीं निभाया। और अपनी कमाई को अपने लिए खर्च करता रहा । इसलिए मैं उसे स्वार्थी और चोर मानता हूँ ।''

''गौरी ने उस चोर को मेरे अधीन दे दिया । मैंने उसे आवश्यक बंधनों में बाँधकर, उसे अच्छा नागरिक बनाने का कर्तव्य निभाया है । किसी दिन वह धनी बन पाए इसका प्रबंध करना मेरा कर्तव्य और लक्ष्य है । एक ओर पत्नी-बच्चे भूखे मरे और दूसरी ओर कोई जुआ खेले, शराब पिए तो उसके आत्मसम्मान का प्रश्न ही नहीं उठता है । काम चोर, स्वार्थी, गैर जिम्मेदार लोगों को ही ऐसा दण्ड मिलता है । दयामय ने क्रोध से भरे स्वर में कहा ।

अब ग्रामाधिकारी और गौरी को वास्तविक विषय का ज्ञान हो गया । गौरी ने दयामय के समक्ष हाथ जोड़कर क्षमा मांगी ।

कुलवंत ने पत्नि से पूरी बात सुनने के पश्चात कहा ''हाँ मैं चोर ही हूँ । दयामय ने मेरे साथ जो व्यवहार किाय है वही सही है । मैं उसी के लायक हूँ ।''

इस घटना के पश्चात् कुलवंत में बहुत परिवर्तन आया । एक वर्ष पूरा होने के पूर्व ही दयामय ने उसे साधारण वस्त्र देकर उसके घर वापस भेज दिया । अब कुलवंत इन व्यसनों से पूर्णतः दूर है ।

इस माह जिनकी जयन्ती है

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

सितम्बर माह की ५ तारीख को सन् १८८८ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म आन्ध्रप्रदेश में हुआ। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के समय से ही मेधावी छात्र रहे राधाकृष्णन का रुझान भारतीय साहित्य, दर्शन और सभ्यता के प्रति अधिक था। जो आगे चलकर भारतीय दर्शन शास्त्री के रूप में प्रसिद्ध हुए और भारतीय दर्शन के वास्तविक रूप को सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने अध्यापन कार्य का आरम्भ मद्रास प्रेजीडेंसी कालेज में दर्शन विभाग में प्राध्यापक के पद से किया। इसके बाद वे कुछ समय के लिए कलकत्ता विश्व विद्यालय में भी दर्शन शास्त्री के पद पर रहे। इसके बाद उन्होंने आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में १९३६ से ३९ तक पूर्वी धर्म के प्रध्यापक पद पर कार्य किया। तत्पश्चात उन्होंने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के उपकुलपति का पदभार सम्भाला और १९४८ तक इसी पद पर बने रहे।

बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में किए गए प्रगति के कार्यों के चलते उन्हें एक महान शिक्षक के रूप में ख्याति मिली। १९४९ में उन्हें यूनेस्को का अध्यक्ष बना दिया गया। परन्तु हाल ही में ब्रिटिश शासन से मुक्त हुए भारत को विश्व के कुछ महत्वपूर्ण देशों में प्रतिनिधित्व के लिए एक योग्य प्रवक्ता की आवश्यकता थी। फलस्वरूप डॉ. राधाकृष्णन को सोवियत संघ जैसे दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्र में भारत का प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया।

उस समय सोवियत संघ पर 'स्टॉलिन' का शासन था। कहा जाता है कि वह किसी की प्रशंसा कहीं करता था। परन्तु वह भी डॉ. राधाकृष्णन के ज्ञान और व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। परिणामस्वरूप भारत और सोवियत संघ के बीच अच्छे राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हो गए।

डॉ. राधाकृष्णन भारत का सम्बन्ध विदेशी राष्ट्रों के साथ सहजता और सौहार्द का बनाने के लिए बहुत दिनों तक कार्य करते रहे। इसके पश्चात जब भारत को एक योग्य उपराष्ट्रपति की आवश्यकता पड़ी, तब डॉ. राधाकृष्णन को चुना गया। और आगे चलकर १९६२ में वे गणतंत्र भारत के राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। राष्ट्रपति की गरिमा को निभाते हुए, पूरे सम्मान के साथ वे १९६७ में इस पद से सेवा निवृत्ति हो गए।

अंग्रेजी भाषा में उनके द्वारा लिखी गई अनेक रचनाओं में 'इण्डियन फिलॉसॉफी' महत्वपूर्ण है। जिसमें उन्होंने कहा है कि सृष्टि की रचना ईश्वर ने एक नियमानुसार किया। जिसमें सदा कुछ न कुछ जुड़ जाता है। यहाँ मनुष्य की क्षमता, सिद्धान्त और सोच को उसके कर्मों में देखा जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन अपने महान व्यक्तित्व और दार्शनिक विचार से मनुष्य के भीतर व्याप्त अनेक प्रतिकूल विचारों पर एक प्रश्नचिन्ह लगाकर १९७५ में मृत्यु को प्राप्त हो गए। उनके जन्म दिन ५ सितम्बर को सम्पूर्ण भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।
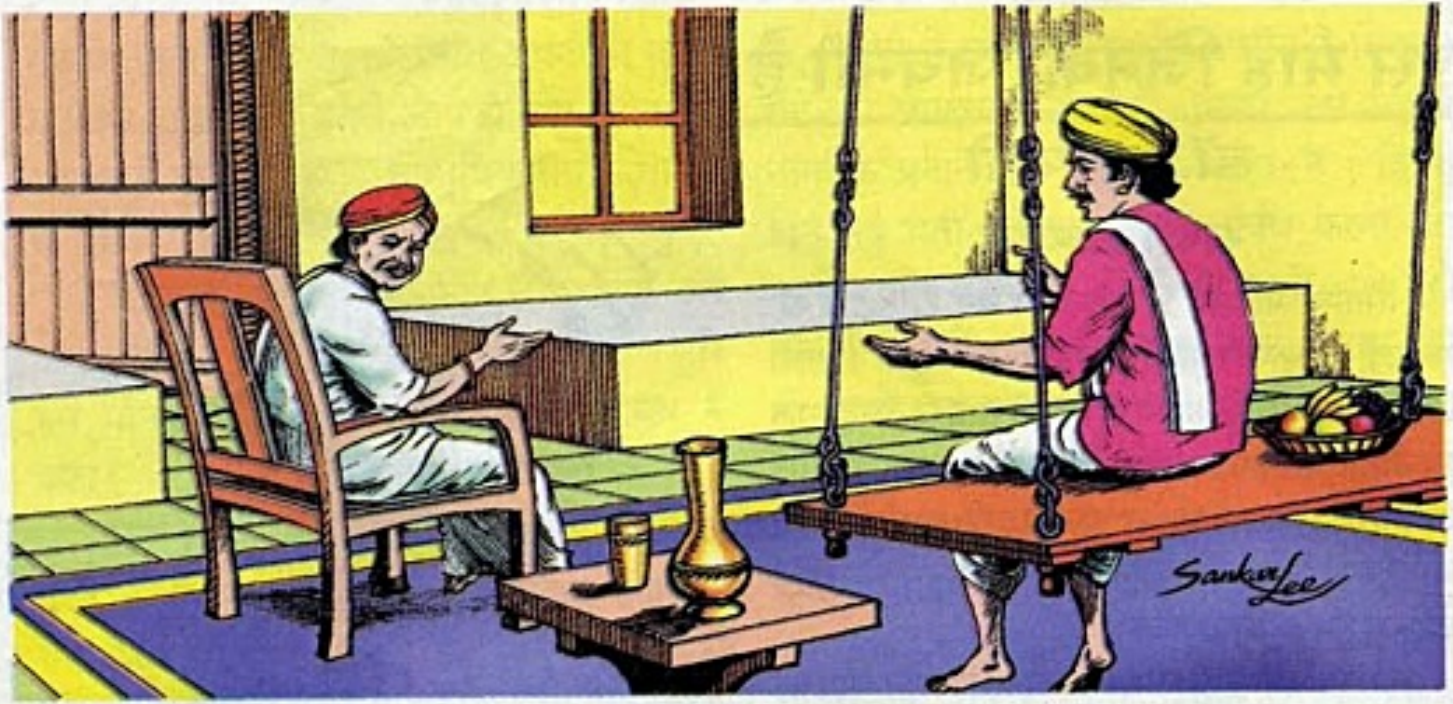
विवाह समस्या

वीरसत्व हेलापुरी के एक सम्पन्न निवासी थे । उनका एक ही पुत्र था । जो बड़ा ही सज्जन, चतुर और आकर्षक था । वीरसत्व उसी प्रकार एक सुन्दर सुशील और काम-काज में दक्ष पुत्र-वधु की खोज में थे ।

इसके लिए उन्होंने अपने दोस्तों और जाने-पहचाने लोगों के परिवारों की लड़कियों को स्वयं देखा । कुछ लड़कियाँ सुशील, चतुर तो थीं परन्तु सुन्दर नहीं थीं । यदि सुन्दर लड़कियाँ देखीं तो उनकी बुद्धि नहीं के बराबर थी । उनकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए। पुत्र का विवाह वीरसत्व के लिए एक गम्भीर समस्या बन गया ।

एक दिन रामचन्द्र नामक उनका एक सम्बन्धी उनके घर आया । वीरसत्व ने उन्हें अपने बेटे की विवाह-समस्या बताई । और कहा "मैंने सोचा था कि इस विषय में कोई समस्या नहीं होगी । सब कार्य आसानी से हो जायेगा । परन्तु कोई उपाय ही नहीं सूझ रहा है । मैं बहुत परेशान हूँ । कहीं ऐसा तो नहीं कि निर्णय लेने में मुझसे कोई भूल हो रही हो?"

रामचन्द्र थोड़े समय तक सोचते रहे और फिर कहा : "लड़के को या लड़की को देखकर हम आसानी से इस बात का पता लगा लेते हैं कि वे सुन्दर हैं या नहीं? वे स्वस्थ हैं या नहीं? किन्तु हम यदि उनकी बुद्धि का अनुमान लगाना चाहते हैं तो यह उनकी बातों या कार्यों को सुन, देखकर लगा सकते है । सम्भवतः तुमने भी रूप देखकर और कुछ प्रश्न पूछकर ही यह

के.एन.वी. आञ्जनेय

भूल की है । जिसके कारण तुम्हें एक योग्य बहू ढूँढने में कठिनाई हो रही है ।''

वीरसत्व ने रामचन्द्र की बातों की वास्तविकता को स्वीकार किया । दूसरे दिन रामचन्द्र जब वापस जाने लगा तो उन्होंने वीरसत्व से कहा ''हाँ ! अभी-अभी स्मरण हुआ कि सुगंधिपुर में बालकृष्ण नामक मेरा जाना-पहचाना एक व्यक्ति है । विवाह योग्य उसकी एक बेटी है । एक बार वहाँ चले जाना और कन्या को देख आना । सम्भवतः तुम्हें अच्छी लगे।'' फिर बालकृष्ण का पता भी लिखकर दिया।

एक सप्ताह के पश्चात वीर सत्व सुगन्धिपुर गए । बालकृष्ण का घर ढूँढते हुए अचानक एक घर के सामने ठिठक गए । उस घर के सामने कीचड़ था। पिछले दिनों भारी वर्षा होने के कारण यहाँ यह कीचड़ भर गया था । कोई और चारा नहीं था, इसलिए वीरसत्व को उस कीचड़ में से चलकर बालकृष्ण के घर जाना पड़ा । उनके पैर कीचड़ से भरे हुए थे ।

वीरसत्व को द्वार पर खड़ा देखकर भीतर से एक युवती आयी । वीरसत्व ने उससे कहा ''बेटी थोड़ा पानी ला देगी तो पाँव धो लूँगा ।''

''पानी तो लाऊँगी, पर उसके पहले आप यह बताइये कि क्या आप हमारे ही घर आए हुए
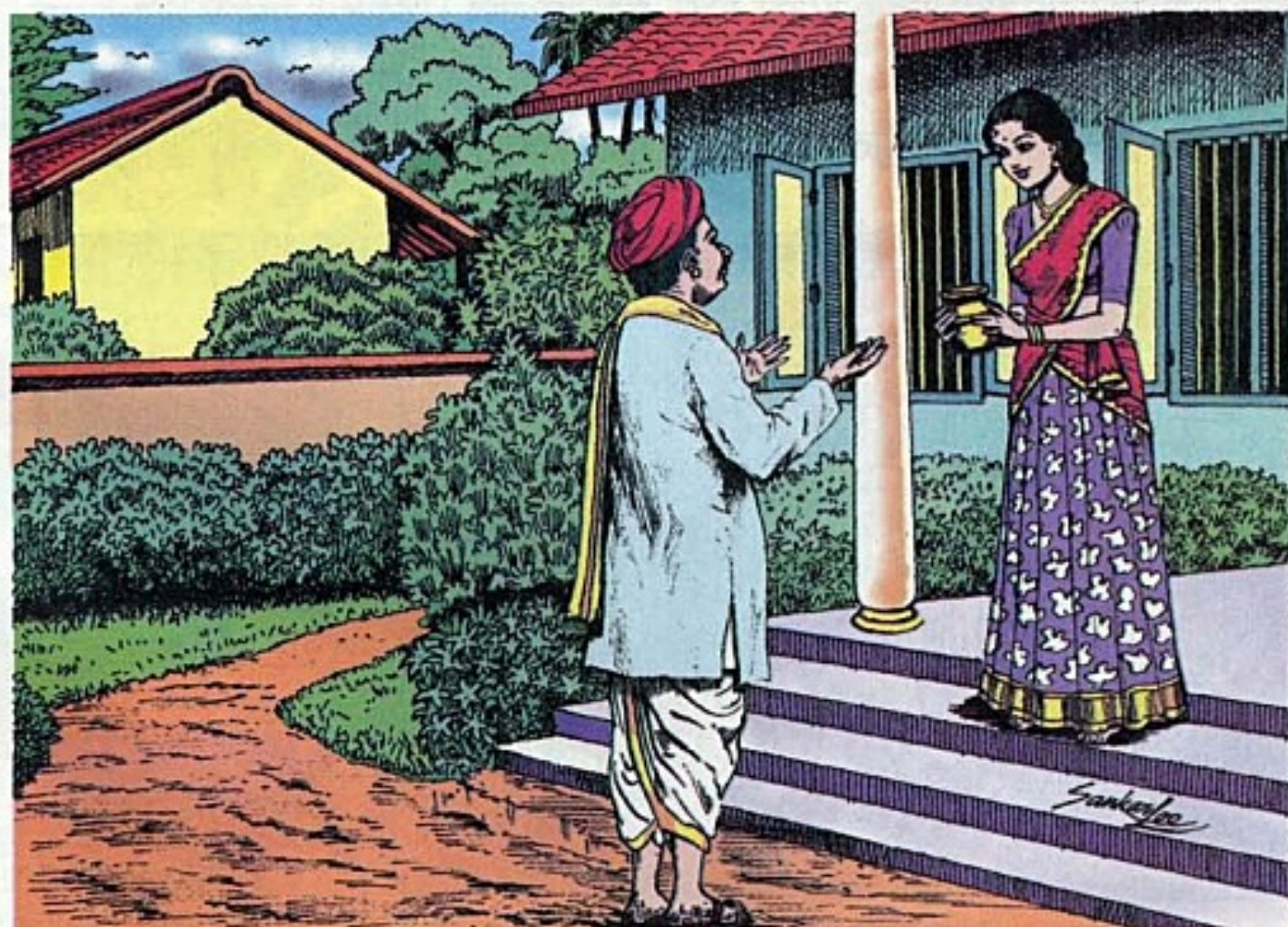
हैं?'' युवती ने पूछा ।

''यह बालकृष्ण का ही घर है न?'' बीरसत्व ने पूछा ।

'हाँ' यह उन्हीं का घर है । लीजिए यह है पानी। पाँव धोकर अंदर आ जाईये । मेरे पिताजी अंदर बैठे हुए है ।'' युवती ने कहा और पाँव धोने के लिए पानी दे दिया ।

बीरसत्व ने हाथ पाँव धो लिए और उस युवती के दिए तालिए से पोंछकर उससे पूछा मैंने पाँव धोने के लिए पानी मांगा, तब तुमने पानी दिए बिना ही मुझसे पूछा कि ''क्या आप हमारे ही घर आये हैं?'' मुझसे जानकारी पाने के बाद ही तुमने पानी दिया और पोंछने के लिए तौलिया भी । क्या मैं जान सकता हूँ कि तुमने ऐसा क्यों किया? तुम्हारा बरताव मुझे बड़ा अजीब लग रहा है ।''

बीरसत्व के इस प्रश्न पर युवती कुछ डरती हुई बोली ''इसमें भला आश्चर्य की क्या बात है? मैंने आपको इससे पहले कभी नहीं देखा । इसका मतलब यह है कि आप इस घर के लिए बिल्कुल अपरिचित है । यदि यह मेरे पिता का घर नहीं हो तो आपको भीतर आने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यदि पिता जी से मिलने नहीं आए यह जानकर भी मैं आपको पानी देती तो भी कोई लाभ नहीं होता क्योंकि आप जाते समय पुनः उसी कीचड़ से होकर जाते ।''

युवती के इस समुचित उत्तर को सुनकर बीरसत्व चकित रह गये । उन्हें लगा कि उसकी तर्कयुक्त बातें कितनी सत्य है । मन ही मन उन्होंने यह निश्चित कर लिया कि यही मेरी पुत्र-वधू होगी । विवाह के सम्बन्ध में बालकृष्ण से बातें करने के लिए बीरसत्व ने सानन्द भीतर कदम रखा ।

THE AMUL CHEESE BOY
IN PICNIC PANIC

One bright sunny day...

...a picnic is in progress.

Little Munnu Verma crawls away.
GURGLE

Suddenly, huge rocks come tumbling down the mountain.
RUMBLE

Amul cheese boy eats an Amul cheese slice...

...and becomes strong and powerful.

He smashes the falling rocks...
BANG

...reducing them to small pieces.
CRACK

Munnu is rescued and back with his family.

All thanks to the cheese that has more milk in it.

Amul cheese slices.
Amul cheese. Yes please!
Amul
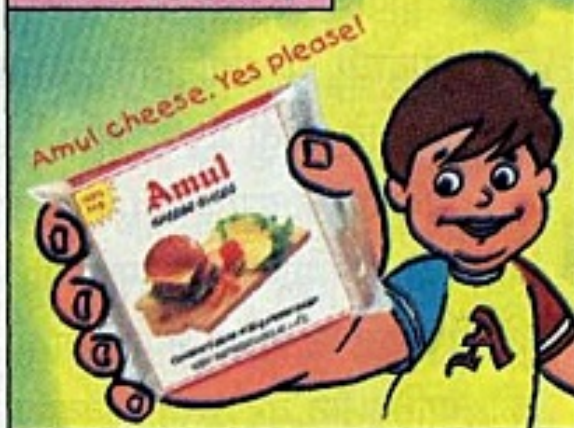
एक महान सभ्यता की झाँकियाँ :
युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

९. वह बालक जिसने स्वयं अपना भाग्य बदल दिया

"दादाजी क्या हम अपने त्यौहारों और रीति रिवाजों को नजरअंदाज नहीं करते? आप स्वयं सोचिए कि इनके बारे में हम लोग कितना कम जानते है!" चमेली ने कहा ।

"वस्तुतः त्यौहारों और रीति रिवाजों के पीछे बहुत सारी मान्यताएँ हैं । जिनका बहुत महत्व भी है । परन्तु हम लोगों को उन कहानियों के बारे में भी ध्यान रखना चाहिए जो इन पर्वों के बारे में शताब्दियों से प्रचलित हैं ।" दादाजी ने कहा ।

"दादाजी, ये कहानियाँ किस प्रकार बनती हैं और आगे बढ़ती हैं?" संदीप ने पूछा ।

इसके अनेक कारण है । परन्तु इसमें मुख्य कारण है अनभिज्ञता । जब कभी भी व्यक्ति किसी घटना के बारे में न जानता हो तो दूसरे को चाहिए कि वह इसका विवरण बताए । तुमने दिवार पर टंगा हुआ वह चित्र देखा होगा, जिसपर बहुत बिभत्स तस्वीरें बनी है । जो शिव भगवान की ओर फाँस फेंक रही है । शिव का त्रिशूल उन्हें दूर भगा रहा है ।

"दादाजी" यह तो टैलीपैथी लगती है । बहुत बार मैंने आपसे पूछना चाहा कि उस चित्र में शिव के पीछे जो एक छोटा सुन्दर बालक अपने दोनों हाथ जोड़े खड़ा है उसका क्या मतलब है ?

उस चित्र में दर्शाए उस बालक की स्थिति के पीछे अवश्य कोई कथा होगी ! दादाजी क्या आप यह कहानी हमें नहीं सुनाएँगे, जिससे हमारा लाभ हो ।" चमेली ने कहानी सुनाने की मांग की ।

'मुझे अवश्य बताना पड़ेगा चमेली । क्योंकि जो चित्र तुमने देखा है, उसे समझाने के लिए

की गाथा

कहानी बताना आवश्यक है ।'' प्रो. देवनाथ ने कहा जो उस पौराणिक कथा को बताए ।

''बहुत समय पहले मृकन्डा नामक एक ऋषि रहते थे । उनकी कोई संतान नहीं थी । जिसके कारण उन्होंने कई वर्षों तक भगवान शिव की पूजा की और तपस्या की । उसके भाग्य में निःसंतान होता लिखा था । इसलिए उनकी प्रार्थना एवं तपस्या किसी शर्त के बिना काम नहीं करती । भगवान शिव एक दिन प्रकट हुए और मृकन्डा से पूछा कि ''तुम्हें कैसा पुत्र चाहिए? क्या तुम १०० वर्षों तक जीवित रहने वाले एक मूर्ख पुत्र की इच्छा रखते हो अथवा १२ वर्षों तक ही जीवित रहने वाले एक विद्वान सज्जन पुत्र की ।''

साधु होते तथा सभी वस्तुओं को जानने वाले मृकन्डा ने दूसरे तरह के पुत्र को स्वीकार किया ।

कुछ दिनों के पश्चात उनके घर एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम मार्कन्डेय रखा गया । मात्र पाँच वर्ष के मार्कन्डेय ने अपनी क्षमता और विद्वता का परिचय देना आरम्भ कर दिया। दूर-दूर के साधु संत उस बालक से मिलने की इच्छा से आने लगे । मिलने के बाद वे पूर्ण आस्वस्त होकर जाते । मार्कन्डेय ने मात्र अपने ज्ञान से ही नहीं बल्कि अपनी शिष्ट व्यवहार और ग्रहण करने की शक्ति से भी सभी को प्रभावित किया ।

जब वह मात्र ८ वर्ष के थे तो वे साधुओं को बड़ी सरलता से वेद को समझा लेते थे । इसमें कोई संदेह नहीं कि उनके माता-पिता अपने पुत्र की इस योग्यता पर गर्वित होते और बड़ा प्रसन्न होते । परन्तु जब मार्कन्डेय ने अपनी आयु के दस वर्ष पूरे कर लिए तो उनके माता-पिता के मुखण्डल पर दुःख के बादल छा गए। उनको मालूम था कि यह अद्‌भुत ज्ञानी बालक दो वर्ष के बाद जीवित नहीं रहेगा । शीघ्र ही उनका दुःख आँसू बनकर बहने लगा । पहले तो वे छुप-छुपकर रो लेते थे । परन्तु जब मार्कन्डेय की आयु के कुछ महीने की बाकी रहे

तो अपने को रोक न सके । जब वे रोरोकर अपने भाग्य को उलाहना देते तो एक दिन मार्कन्डेय ने पूछा "पिताजी ! एक संत होकर भी आप किस दुःख के कारण इतने दुःखी है कि आपके अश्रुकण रूकते नहीं? और मेरी माता जिसकी दृढ़ता और शांत स्वभाव पूरे सार में प्रचलित है । वह इन दिनों एक अवला की भाँति ऊश्रु बहाती हुई अपने भाग्य को कोसती है । यह सब क्या है ? कृपया मुझे भी बताईये, मैं आपके दुःख को समाप्त करूँगा ।" मार्कन्डेय ने कहा ।

बड़े दुःख भरे स्वर में मृकन्ड ऋषि ने अपने पुत्र से कहा कि 'हे पुत्र तुम हमारे दुःख का निवारण नहीं कर सकते । मेरा हृदय यह कहते हुए विदीर्ण हो रहा हैं कि तुम्हीं हमारे दुःख का कारण हो । आश्चर्य चकित होते हुए मार्कन्डेय ने पूछा "क्या मैं उस कोटि का अयोम्य एवं पातकी हूँ कि जो अपने श्रेष्ठ माता-पिता के अपार दुःख का कारण बन गया ।"

"यह कारण पूर्णतः दूसरा है पुत्र । तुम इतने अच्छे और सज्जन तथा आज्ञाकारी पुत्र हो कि हम तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकते ।" यह कहते हुए मृकन्डा ऋषि ने मारकन्डेय को उनके जन्म की पूर्ण कथा कह सुनाई ।

मार्कन्डेय बहुत समय तक मौन रहे । फिर माता-पिता के प्रति सौहार्द एवं प्रेम प्रकट करते हुए एक और दृढ़संकल्पी ध्वनि निकली । उन्होंने कहा - "आप लोग चिंतित न हों । यह विषय आप मुझे पर छोड़ दीजिये । मुझे अपने भाग्य को स्वयं देखने दीजिये ।"

मार्कन्डेय एक शांत स्थान चुनकर वहीं समधि लगाकर बैठ गए । और शीघ्र ही एक गहरी प्रार्थना में खो गए । उन्होंने अपने मित्रों और माता-पिता को पहले ही बता दिया था कि कोई भी उन्हें बाधा न पहुँचाए । ऊँचे-ऊँचे वर्कीले पहाडों ने निरीक्षण में मार्कन्डेय शिवजी के गहरे ध्यान में डूबते चले गए । एक समय ऐसा आया जब कोई भिन्न मार्कन्डेय बचा ही नहीं । वे शिव के अंश में विलीन हो गए। अर्थात शिव और मार्कन्डेय एक हो गए । यहाँ शिव का अर्थ शुद्ध और जिसे समाप्त न किया

जा सके से है। ऐसा होने के पश्चात, मार्कन्डेय ने समय, जन्म और मृत्यु को अपने वश में कर लिया ।

भगवान शिव के वरदान अनुसार जब मार्कन्डेय ने अपनी आयु का १२वाँ वर्ष पूरा किया तो विधान अनुसार मानव शरीर से आत्मा को मुक्ति प्रदान करने वाली शक्तियाँ मार्कन्डेय के निकट पहुँची । परन्तु उन्हें वहाँ कोई पृथक मार्कन्डेय नहीं मिला । अपनी तपस्या और योग के बल पर शुद्ध (शिव) बन चुके थे । वे शक्तियाँ असफल लौट गयीं ।

एक बार जब मृत्यु की घड़ी टल गई तो मार्कन्डेय एक नए व्यक्ति के रूप में नए जीवन में प्रवेश हुए । धीरे-धीरे वह अपनी गहरी निद्रा से बाहर आए और ऊपर देखा । उन्होंने देखा कि सातों महान ऋषि वहाँ से जा रहे थे। मार्कन्डेय ने सभी को प्रणाम किया और सभी ने उन्हें दीर्घायु होने का आशिर्वाद दिया। इस प्रकार मार्कन्डेय को बहुत लम्बी आयु प्राप्त हुई ।

इस पौराणिक कथा को सुनते हुए संदीप और चमेली ऐसे खो गए कि वे वहाँ से उठना भी नहीं चाहते थे । परन्तु वह समय दादाजी का अपने मित्रों के साथ बिताने का था और इस प्रकार यह भाग समाप्त हुआ ।

तो मेरे बच्चों, अब तुम समझे कि जिस चित्र के बारे में हम बात कर रहे थे उसका क्या अर्थ है । मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की यह क्रिया पूरे तरीके से 'शिवो अहम्' को नहीं समझा सकती । अतः पौराणिक सत्य को जीवित रखने के लिए इसे एक नाटक के रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक था । प्रचलित मान्यता के अनुसार यमराज और दयामय भगवान शिव के बीच झगड़ा हो गया, जो बाद में सत्य की विजय हुई और यह प्रमाणित हो गया ।'' हम लोगों ने समझ लिया । जो कि सीखने का एक मार्ग है प्रसन्नता से खिलते हुए बच्चों ने कहा ।

चन्दामामा

'भारत की खोज' प्रश्नोत्तरी

इस अंक में दी गई प्रश्नोत्तरी के उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। तब तक इनके उत्तर आप स्वयं खोजने की कोशिश करें और भारत के पुरा काल व परम्परा के ज्ञान से अपने को समृद्ध करें।

1

१. अ. वह कौन महान संत दार्शनिक है जिन्होंने भारत में चार स्थानों में सौ बर्षों पूर्व चार मठों की स्थापना की। जो अभी भी चल रहे है?

आ. वह कौन सा सम्राट था जिसने एक राज्य के विरुद्ध युद्ध किया। लेकिन युद्ध भी विभत्सा एवं दूसरे अन्य झगड़ों को देखकर उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह अहिंसा का महान प्रचारक और पुजारी बन गया?

इ. वह कौन महारानी थी जो साध्वी होकर कवियत्री और गायिका बन गई और अपना राज्य छोड़ दिया। इसके बाद वह एक दूरस्थ मंदिर में जाकर अंतर्धान हो गयीं?

ई. चारों वेदों में से वह कौन सा वेद है जो चिकित्सा के सिद्धान्त बताता है?

उ. वह कौन संत है जिन्होंने 'राजयोग' के बारे में लिखा?

2

राजकुमारी बहुत सुन्दर थी। राजा अपनी पुत्री के लिए योग्य वर की खोज में थे जब कि उनके दो पड़ोसी राज्यों से राजकुमारी के विवाह का प्रस्ताव आ चुका था। वे दोनों शक्तिशाली थे। दोनों ने धमकी दी कि यदि उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया गया तो वे राज्य को नष्ट कर देंगे। उनकी सेनाएँ राज्य पर चढ़ आई। असहाय राजा को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? किसी ने राजा को सलाह दिया कि इस समस्या का समाधान मात्र राजकुमारी की मौत है। अतः राजकुमारी को मार दिया जाए। लेकिन राजा ने ऐसा करने से मना र दिया। परन्तु जब राजकुमारी को यह पता चला कि उसके पिता की क्या समस्या है तो उसने विष खाकर आत्म हत्या कर ली।

वह राजकुमारी कौन थी? किस राज्य से सम्बन्ध रखती थी?

वे दो शक्तिशाली राज्य कौन से थे?

महाभारत

पांडवों के बारे में धृतराष्ट्र ने जो बातें कहीं, उन्हें सुनकर संजय ने यों समझाया - "राजन, पांडवों के पास मंत्र-तंत्र कोई नहीं हैं, वे युद्ध में अपनी शक्ति का परिचय दे रहे हैं । उनका सद्व्यवहार ही उन्हें विजयी बना रहा है । तुम्हारे पुत्रों ने जो दुष्कृत्य किये हैं, वे ही विषवृक्ष बनकर उनका नाश कर रहे हैं । तुम्हें कितने ही लोगों ने हित की बातें नहीं बतायीं । क्या तुमने उनकी बातें सुनीं? विदुर, भीष्म, द्रोण और मैंने भी तुम्हें खूब समझाया, पर हमारी बातें तुम्हें रुचिकर नहीं लगीं । जैसे तुमने मुझसे पूछा, इसी प्रकार दुर्योधन ने भीष्म से भी पूछा है ।"

इसके बाद संजय ने वे बातें बतायीं जो दुर्योधन ने भीष्म से पूछी थीं - "दादाजी, तुम, द्रोण, कृपाचार्य तथा अन्य महारथी भी अपनी जान लड़ाकर मेरे वास्ते लड़ रहे हैं; फिर भी आप सब पांडवों के सामने ठहर नहीं पा रहे हैं । इसका कारण क्या है?"

इस पर भीष्म ने समझाया - "बेटा, तुम्हें मैंने कई बार समझाया, फिर कह रहा हूँ, सुनो- तुम पांडवों के साथ संधि कर लो और तुम तथा तुम्हारे भाई सुख से रहो । जब तक कृष्ण पांडवों के सहायक बने रहेंगे, तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता ।"

इसके बाद उसे विश्वोपाख्यान सुनाया :

एक बार ब्रह्मदेव गंधमादन पर्वत पर बैठा हुआ था, तभी देवता और ऋषि जाकर उनके चारों ओर एकत्र हो गये । उस वक्त आसमान में एक प्रकाशमान विमान उन्हें दिखायी दिया। ब्रह्म ने उसे देख हाथ जोड़कर ध्यान किया । इसे देख देवता और ऋषि उठ खड़े हुए और सबने प्रणाम किया ।

ब्रह्मा ने उस विमान की स्तुति करके पूछा - ''हे देव!, आप अपने अंश को भेजकर यदुवंश में जन्मधारण कराइये जिससे जगत का कल्याण हो!''

''तुम्हारी इच्छा को जान लिया । ऐसा ही करूँगा ।'' यह उत्तर सुनायी दिया और साथ ही विमान अंतर्धान हो गया ।

तब देवता और ऋषियों ने ब्रह्म से पूछा - ''पितामह, आपने अभी किसकी प्रार्थना की और क्यों?''

इस पर ब्रह्मा ने उत्तर दिया - ''वे महा विष्णु हैं । प्राचीन काल में जो दैत्य, दानव और राक्षस मर गये थे, वे फिर पृथ्वी पर पैदा हुए हैं । उकना बध करने के लिए नर के साथ नारायण को भी जन्मधारण करना है । उनके साथ देवता भी पैदा होंगे । उन्हें कोई जीत नहीं सकता, पर यह बात मूर्ख लोग नहीं जानते ।''

भीष्म ने यह कहानी सुनाकर दुर्योधन से कहा - ''तुम भी एक क्रूर राक्षस होगे, इसलिए तुमने कृष्ण और अर्जुन के साथ वैर मोल लिया है ।'' इसके बाद उस दिन सब लोग अपने अपने शिविरों में जाकर सो गये ।

युद्ध के पांचवें दिन का प्रातःकाल हो गया। उभयदलों की सेनाएँ व्यूह रचकर युद्ध के लिए तैयार हो गयीं । कौरवों ने मकर व्यूह की रचना की तो पांडवों ने श्वेन व्यूह की । पांडवों के व्यूह के सामने भीम, शिखंडी तथा धृष्टद्युम्न खड़े हो गये । उनके पीछे सात्यकी तथा अर्जुन थे ।

युद्ध क्षेत्र में दुर्योधन ने द्रोण से कहा - ''आचार्य, आप आज पांडवों का बध कीजिए।'' यह बात सुनते ही द्रोण ने जोश में आकर सात्यकी का सामना किया । सात्यकी की सहायता के लिए भीम आये तो द्रोण की मदद के लिए भीष्म, और शल्य ने आकर युद्ध किया । भीष्म और द्रोण के द्वारा भयंकर युद्ध

करते देख उनका सामना करने के लिए अभिमन्यु, उप पांडव तथा शिखण्डी आ पहुँचे। भीष्म ने शिखण्डी के साथ युद्ध नहीं किया । द्रोण ने भयंकर रूप में शिखंडी का सामना किया, तब वह ठहर न सका और युद्ध क्षेत्र में दूर हट गया । तब पांडवों के पीछे अर्जुन ने आकर भीष्म का सामना किया । दोनों ने घोर युद्ध किया । उसी समय उभय पक्षों के वीरों ने दिल लगाकर युद्ध किया । उस युद्ध में दोनों दलों के असंख्य सैनिक मारे गये ।

पांचवें दिन जो महा भारत युद्ध हुआ, उसकी प्रमुख घटनाएँ हैं : अश्वत्थामा तथा अर्जुन के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें अर्जुन ने अश्वत्थामा के कवच को अपने बाणों से छेद दिया, परंतु इसकी परवाह किये बिना ही उसने साहस पूर्वक युद्ध किया । मगर अर्जुन ने यह सोचकर अश्वत्थामा को छोड़ दिया कि वह उसका गुरु पुत्र है । और अन्य शत्रुओं की खोज़ में चला गया । आज दुर्योधन तथा भीम के बीच दारुण युद्ध हुआ । अभिमन्यु तथा लक्ष्मण कुमार की रक्षा की और उसे दूसरी ओर ले गया ।

उस दिन सात्यकी के द्वारा कौरव सेनाओं का वध करते देख दुर्योधन ने उस पर अनेक रथ भेजे । सात्यकी ने अपने अस्त्रों के द्वारा उन रथियों को तंग किया और उन सेनाओं के सेनापति भूरिश्रव पर टूट पड़ा । भूरिश्रव बड़ा योद्धा था । उसके साहस को देख सात्यकी की मदद करनेवाले सभी योद्ध तितर-बितर हो गये। तब सात्यकी के पुत्रों

ने आकर भूरिश्रव को घेर लिया और भूरिश्रव के हाथों में बुरी तरह से घायल हो गये । अपने पुत्रों को गिरते देख सात्यकी क्रोध में आया और उसने भूरिश्रव के साथ द्वन्द्व युद्ध किया । दोनों के रथ ध्वस्त हो गये । तब वे तलवार लेकर जमीन पर खड़े हो गये । दोनों के बीच भयंकर खड्ग युद्ध होने लगा । उस वक्त भीम ने आकर सात्यकी को अपने रथ पर ले लिया । इसी तरह भूरिश्रव को दुर्योधन अपने रथ में ले गया ।

सूर्यास्त तक दोनों दलों की सेनाएँ थक गयीं, और आगे युद्ध न कर सकने के कारण अपने अपने शिविरों को लौट गयीं ।

छठे दिन सवेरा होते ही फिर युद्ध शुरू हो गया । इस बार पांडव सेनाओं ने मकर व्यूह
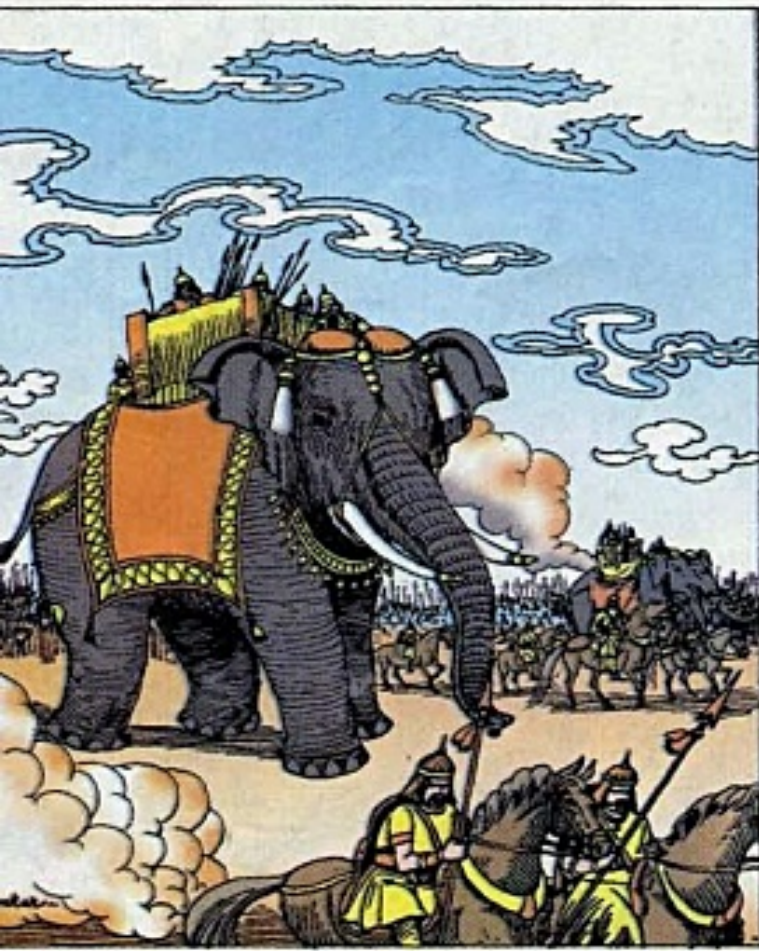
तथा कौरव सेनाओं ने क्रौंच व्यूह धारण किये। मगर इन व्यूहों के टूटने में ज्यादा देर न लगी । प्रारंभ में ही भीम तथा द्रोण के बीच लड़ाई छिड़ गयी । द्रोण ने भीम को अपने बाणों से खूब सताया । भीम ने क्रोध में आकर द्रोण के सारथी को मार डाला । द्रोण खुद अपने रथ को चलाते पांडवों की सेनाओं को तितर-बितर करने लगे । तब भीष्म ने द्रोण की सहायता की। इसी प्रकार भीम और अर्जुन ने कौरव सेना के व्यूह को तितर-बितर कर दिया । धीरे-धीरे युद्ध चारों ओर फैल गया ।

भीम ने भीष्म की परवाह किये बिना धृतराष्ट्र के पुत्रों का वध करने का निश्चय करके कौरव सेना के बीच प्रवेश किया । उन लोगों ने भीम को प्राणों के साथ पकड़ने का प्रयत्न किया । इसे भाँपकर भीम गदा लेकर रथ से उतर पड़ा और कौरव-सेना का निर्मूल करने लगा ।

द्रोण के साथ युद्ध करनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूर पर भीम के साथ रथ को देखा, तब द्रोण को छोड़ भीम के रथ के पास लौट आया, रथको खाली देख सारथी से पूछा - "भीम कहाँ?"

इस पर सारथी दिशोक ने कहा - "राजन, मुझे दो घड़ी यहीं पर ठहरने का आदेश दे भीम कौरव-सेना में घुस गये हैं ।" धृष्टद्युम्न ने सोचा कि भीम खतरे में पड़ सकता है । तब वह भी उसी मार्ग पर चल पड़ा । थोड़ी देर जाने पर रास्ते में पड़नेवाले हाथियों तथा सैनिकों का वध करते धृष्टद्युम्न को भीम दिखाई दिया । इतने में कौरव योद्धाओं ने भीम को घेर लिया और उस पर बाणों की वर्षा की । धृष्टद्युम्न ने वहाँ पर पहुँचकर देखा कि भीम के शरीर से खून की धाराएँ बह रही हैं, फिर भी वह मृत्युदेवता जैसे लग रहा है । तब धृष्टद्युम्न ने भीम को अपने रथ पर बिठाया और उसके शरीर में धंसे बाणों को निकाल कर उसके साथ आलिंगन किया ।

इस बीच धृतराष्ट्र के पुत्र भीम तथा धृष्टद्युम्न का वध एक साथ करने के ख्याल से उन पर टूट पड़े । उनके बाणों की वर्षा में डूबकर भी धृष्टद्युम्न विचलित न हुआ और उन सबको सम्मोहन अस्त्र के द्वारा बेहोश कर दिया । इतने में द्रोण वहाँ आये, उन्होंने प्रज्ञास्त्र का प्रयोग करके बेहोश हुए लोगों को जगाया ।

इतने में भीम और धृष्टद्युम्न को न पाकर युधिष्ठिर घबरा और उन्होंने अभिमन्यु इत्यादि बारह योद्धाओं को भेजा । उन्हें देखते ही भीम और धृष्टद्युम्न अत्यंत उत्साह के साथ युद्ध करने लगे । तभी धृष्टद्युम्न ने देखा कि उसका पिता द्रुपद द्रोण के वारों से परेशान हो भागता जा रहा है । उसने द्रोण का सामना किया और अपने रथ तथा सारथी को खोकर तेज़ी के साथ अभिमन्यु के रथ पर सवार हो गया । द्रोण पांडवों की सेना को परेशान करते देखकर भी भीम तथा धृष्टद्युम्न कुछ न कर पाये । द्रोण के अद्भुत पराक्रम को देख दोनों दल की सेनाओं ने उसकी प्रशंसा की ।

दुर्योधन आदि के मन में फिर से भीम को बंदी बनाने का विचार आया । मगर युधिष्ठिर के द्वारा भेजे गये अभिमन्यु इत्यादि योद्धाओं ने उन्हें भगा दिया । मगर भीम को इस बात का बड़ा दुख हुआ कि दुर्योधन आदि उसके हाथों में आकर भी खिसक गये हैं ।

युद्ध क्षेत्र के दक्षिणी भाग में अकेले अर्जुन ने शत्रु की अपार सेना का संहार किया ।

सूर्य को तेज़ी के साथ पश्चिमी दिशा में जाते देख दुर्योधन के मन में भीम को मार डालने की प्रबल इच्छा पैदा हुई । इस विाचर के आते ही दुर्योधन भीम से जूझ पड़ा । भीम के हाथों अपने छत्र तथा ध्वजा को तुड़वाकर मार खाया, तब कृपाचार्य के रथ में जाकर छुप गया । उस समय धृष्टकेतु, अभिमन्यु, उपपांडव, आदि ने वगैरह ने धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ युद्ध चालू रखा । उस भयंकर युद्ध में व्द्रुष्कर्ण नामक व्यक्ति मर गया ।

थोड़ी देर बाद सूर्यास्त हो गया । दोनों सेनाओं में शांति छा गयी । युद्ध रोककर दुर्योधन अपने शिविर को लौट गया । युधिष्ठिर ने खुशी

में आकर भीम तथा धृष्टद्युम्न के साथ आलिंगन किया और तब वे भी प्रसन्नता पूर्वक अपने अपने शिविरों में लौट आये ।

थोड़ी देर विश्राम करने के बाद दुर्योधन ने भीष्म से कहा - ''दादाजी, हमने कई अभेद्य व्यूह रचे, फिर भी पांडवों ने उन्हें तोड़ डाले। आज भीम ने हमारे मकर व्यूह में घुसकर मुझे खूब सताया। उसकी भयंकर आकृति को देख मैं सचमुच बेहोश हो गया। मेरा मन घबरा रहा है । मेरी आशा है कि आपका अनुग्रह प्राप्त कर पांडवों का बध करूँ और विजय प्राप्त करूँ !''

इस पर भीष्म ने समझाया - ''बेटा, तुम्हें विजय दिलाने के विचार ही से मैं अपनी शक्ति भर प्रयत्न कर रहा हूँ । मैं किसी भी प्रकार से अपनी आत्मा को धोखा नहीं दे रहा हूँ । पांडवों के पक्ष में लड़नेवाले लोग महान शूर, महारथी, शस्त्रवेत्ता हैं, साथ ही वे सब जी तोड़ लड़ रहे हैं, ऐसे महान वीरों को पराजित करना नामुमकिन है । मैं सच कहता हूँ कि अपने प्राणों की परवाह किये बिना तुम्हारे वास्ते लड़ रहा हूँ, तुम्हारे वास्ते ज़रूरत पड़ने पर मैं तीनों लोकों को भस्म करने के लिए तैयार हूँ ।''

ये बातें सुन दुर्योधन बड़ा प्रसन्न हुआ ।

भीष्म ने थोड़ी देर तक सोचकर दुर्योधन से फिर यों कहा - ''तुम्हारे वास्ते लड़ने में उत्साह दिखानेवालों में मेरे अतिरिक्त द्रोण, शल्य, कृतवर्मा, श्वत्थामा, सोमदत्त, सैंधव, विंदानुविंद, बाह्लिक, बहद्बल, चित्रसेन, विविंशती इत्यादि महावीर, हजारों रथ-योद्धा, गजसेना व अश्वदल भी सन्नद्ध हैं । ये सब देवताओं को भी पराजित करनेवाले हैं, लेकिन मैं तुम्हारे हित के वास्ते एक बात रहा हूँ । सच बात तो यह है कि इंद्र के साथ सभी देवता भी मिलकर आ जायें तब भी पांडवों को हरा नहीं सकते । इसलिए यह कहना संभव नहीं है कि पांडव ही मुझे जीत सकेंगे या मैं पांडवों को जीत सकता हूँ ।''

ये बातें सुनाने के बाद दुर्योधन के शरीर में हुए घावों को भरने के लिए भीष्म ने उसे विशल्यकरणी नामक दवा दे दी ।

जो छुओ वह सोना हो जाये

एक व्यापारी के एक लड़का था । व्यापारी की पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी । इसलिए उसने अपने लड़के को बड़े लाड़-प्यार से पाला पोसा । उस के लिए उसने सोना दोनों हाथों से कमाया और उसके सुख सन्तोष के लिए उसे पानी की तरह खर्च भी करता आया।

एक बार व्यापारी बीमार पड़ा । मृत्यु को निकट पा उसने अपने लड़के को बुलाकर कहा - ''बेटा, मैं अपने जीवन के अन्तिम क्षण में तुमको आशीर्वाद देता हूँ कि अगर तुम मिट्टी भी छुओ तो वह सोना हो जाये ।'' यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये ।

व्यापारी का लड़का, अपने पिता के लिए कुछ दिन रोया धोया । शोक के कम हो जाने के बाद, वह भी पिता की तरह व्यापार करने लगा । भाग्य ने उसका भी व्यापार में साथ दिया । उस पर भी सोने की वर्षा हुई ।

कुछ समय तक इस प्रकार खूब पैसा कमाने के बाद, लड़के को अपने पिता का अन्तिम आशीर्वाद याद हो आया । उसने सोचा कि उनके ही आशीर्वाद के कारण उसको इतना धन मिल था ।

''भाग्य का इस प्रकार खिलना, आपत्तिजनक है । इस बारे में कुछ न कुछ करना होगा ।'' यह सोच उसने माल ऐसी जगह खरीदने का निश्चय किया, जहाँ वह महँगा था जहाँ वह सस्ता था, वहाँ बेचने की सोची । इसलिये उसने जहाँ खजूर बहुत महँगे थे, वहाँ खरीदे और उन्हें बेचने के लिए मिश्र ले गया । उस देश में खजूर निहायत सस्ते होते हैं ।

मिश्र के राजा को मालूम हुआ कि कोई कहीं से खजूर लाकर, उसके देश में बेच रहा था । उसने अपने कर्मचारियों से पूछा - ''कौन है यह अजीब व्यापारी?'' कर्मचारी, उस लड़के को राजा के पास ले गये ।

''तुम इस मूर्खता का व्यापार करके अपने को क्यों तबाह करते हो?'' राजा ने युवक से पूछा ।

''महाराज! पिताजी के आशीर्वाद के कारण मैं चाहे कुछ भी करूँ, मुझ पर सुवर्ण वर्षा होती रहती है । भाग्य का इतना साथ देना अच्छा नहीं है । इसलिये मैं उसके रास्ते में बिघ्न डाल रहा हूँ ।'' युवक ने कहा ।

''तुम्हारे पिता ने तुम्हें क्या आशीर्वाद दिया था ?'' राजा ने पूछा ।

''यह कि यदि मैं इस तरह मिट्टी छूऊँ तो वह सोना हो जायेगा ।'' कहते हुये लड़के ने हाथ में कुछ मिट्टी ली और उसे छोड़ दिया । उसके छोड़ने के बाद युवक के हाथ में कुछ रह गया ।

''क्या है?'' राजा ने आश्चर्य से पूछा ।

''कोई मुद्रिका-सी है ।'' कहकर युवक ने राजा के हाथ में वह रखी । वह राजा की मुद्रिका थी । उनके वंश में न मालूम वह कब से थी । एक साल पहिले वह खो गई थी । उसे ढुँढवाने के लिए बहुत सारा रुपया भी खर्च किया था । परन्तु वह मुद्रिका किसी को भी नहीं मिली । यह देखकर राजा आश्चर्य में पड़ गई । उन्होंने चकित होते हुए कहा - ''सचमुच तुम्हारे पिता का आशीर्वाद अद्भुत है । तुम्हारा भाग्य भगवान भी नहीं बदल सकता।''

यह कहकर, राजा ने युवक से अपनी बेटी का विवाह उसके साथ करने का प्रस्ताव रखा। युवक के लिए इससे अच्छी बाद क्या हो सकती थी । उसने प्रसन्न चित्त से राजा का यह प्रस्ताव स्वीकार किया । बाद में, वह लड़का ही मिश्र का राजा बना ।

चित्र
कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो? तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय
प्रतियोगिता
चन्दामामा
वडपलनि
चेन्नै - ६०० ०२६

जो हमारे पास इस माह की 25 तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर 100/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

अगस्त अंक की पुरस्कार विजेता हैं :
सविता शर्मा
ए-११, दिलशाद गार्डन
दिल्ली - ११० ०९५.

विजयी प्रविष्टि :
बाबा की लाठी, मेरी मेज़
बचपन बुढ़ापा है ना एक

Things you need on a learning curve.
Introducing Schoolnetindia.com. A portal that combines knowledg
and wisdom for kids, parents and teachers. It has study materials. A digit
library. Lesson banks. Tutorials. Online testing. Projects. And e-storie
poems and cartoons, advice on how to deal
with special children, value education...
in fact, on life's learning curve, it is an
essential destination.
www.schoolnetindia.com
SCHOOLNE
Networked Learning
Technology. Content. Training.
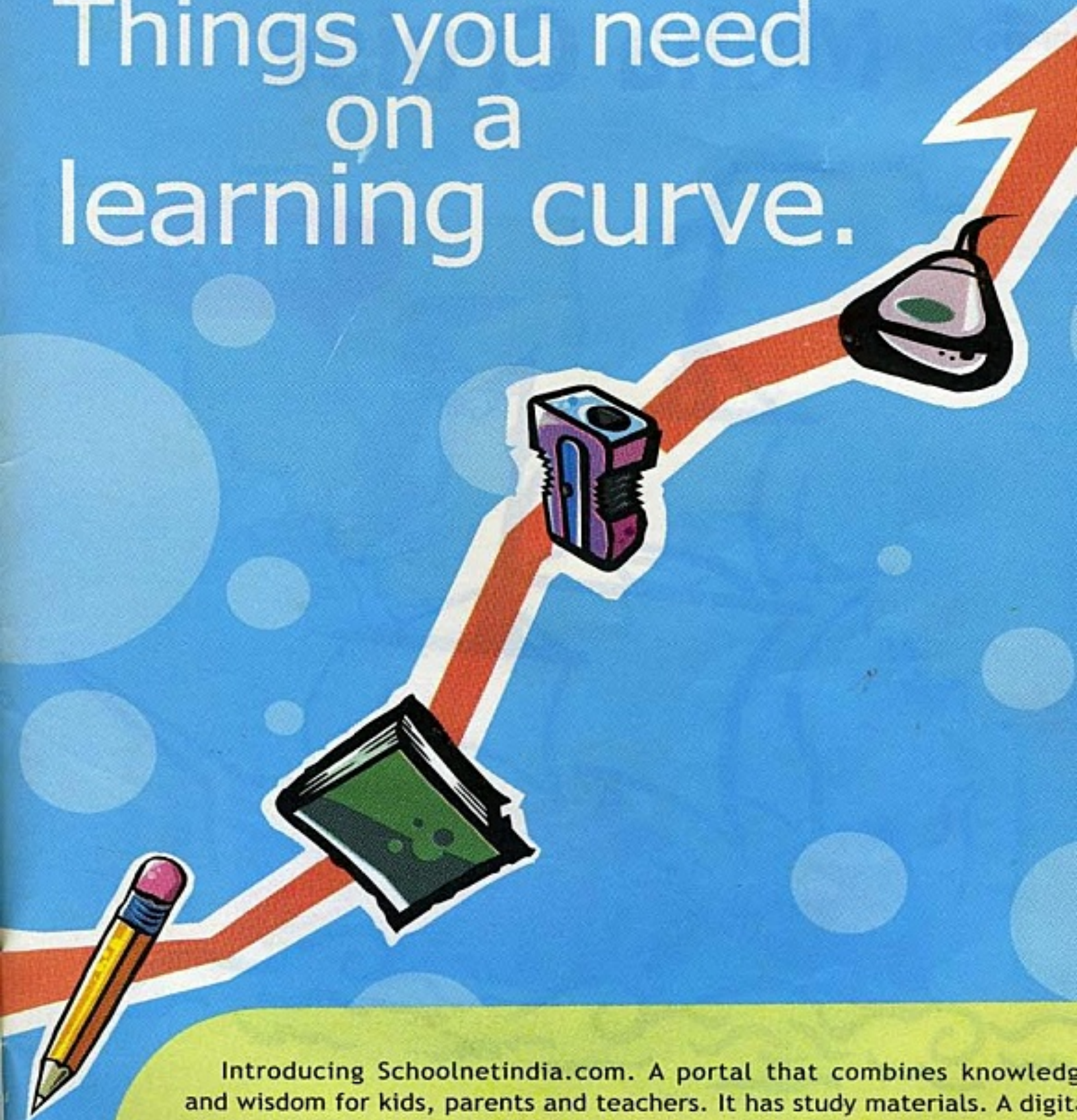
CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 2000 Registrar of Newspapers, India RN1087/57